Postal Reg. No.GDP -45/2020-2022

अल्लाह तआला का आदेश

اَفَلَا يَتُوْبُوْنَ اِلَى اللّٰهِ وَيَسْتَغْفِرُوْنَهٗ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ○

(अल् मायदा:75)

अनुवाद : अत: क्या वे अल्लाह की तरफ़ तवज्जा करते हुए झुकते नहीं और उससे बख़शिश तलब नहीं करते जबकि अल्लाह बहुत ही बख़शने वाला (और)बार-बार रहम करने वाला है।

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

वर्ष- 6
अंक- 34

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly BADAR Qadian HINDI

मूल्य 575 रुपए वार्षिक

संपादक
शेख़ मुजाहिद अहमद

उप संपादक
सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद

16 मुहर्रम 1442 हिज्री कमरी 26 ज़हूर 1400 हिज्री शम्सी 26 अगस्त 2021 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़जल नाज़िल करता रहे। आमीन

आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की नसीहतें

सदक़ा करने में जल्दी करने की ओर ध्यान दिलाना

(1419) हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि एक व्यक्ति रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास आया। उसने कहा : हे रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम)! सवाब में कौन सा सदक़ा बढ़कर है? आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया : यह कि तू सदक़ा करे जब तू सेहतमंद हो। माल हासिल करने की ख़ाहिश रखता हो और कंजूस हो। मोहताजी से डरे और मालदार होने की आशा रखता हो और इतनी देर न कर कि जान हलक़ में आ पहुंचे और तू कहे कि अमुक को इतना देना, अमुक को इतना देना, हालाँकि वह अमुक का तो हो हि चुका है।

लंबे हाथ से मुराद सख़ावत (दानशीलता)

(1420) हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की कुछ पत्नियों ने नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से कहा : हम में से कौन सबसे जल्दी आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से मिलेगी? आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया : जिसके हाथ ज़्यादा लंबे हैं तो एक लकड़ी ले कर वे अपने-अपने हाथ नापने लगीं। हज़रत सौदा रज़ियल्लाहु अन्हा का हाथ सबसे ज़्यादा लंबा था। हमें बाद में मालूम हुआ कि हाथ की लंबाई से मुराद तो सदक़ा था और हम में से वह पत्नी सबसे पहले आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से मिलेगी जो सदक़ा को बहुत पसंद करती थीं।

सही बुख़ारी, भाग 3 किताब अल्) (ज़कात, प्रकाशन 2008 क़ादियान

☆ ☆ ☆ ☆

जो कोई ख़ुदा तआला के साथ सच्चे सम्बन्ध पैदा कर ले वह उन बरकतों से लाभान्वित हो सकता है जिन से पहले सच्चे लोगों को दिए गए।

उपदेश सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

सच्चे उलूम का सरचश्मा क़ुरआन-ए-मजीद

और यह इस लिए कि अल्लाह तआला ने सच्चे उलूम का स्रोत और सरचश्मा कुरआन शरीफ़ इस उम्मत को दिया जो व्यक्ति इन हक़ायक़ तथा मआरिफ़ को पा लेता है जो क़ुरआन शरीफ़ में वर्णन किए गए हैं और जो हक़ीक़ी तक़्वा(संयम) और अल्लाह के भय से से प्राप्त होते हैं,उसे वह ज्ञान मिलता है जो इस को बनी इस्राईल के अंबिया का सदृष्य बना देता है। हाँ यह बात बिलकुल सच्च है कि एक व्यक्ति को जो हथियार दिया गया है यदि वह इससे काम न ले तो यह उसका अपना क़सूर है न कि इस हथियार का। इस वक़्त दुनिया की यही हालत हो रही है। मुसलमानों ने बावजूद के क़ुरआन शरीफ़ जैसी अनुपमीय नेअमत उनके पास थी जो उनको हर गुमराही से मुक्ति प्रदान करती और हर अन्धकार से निकालती है, परन्तु उन्होंने इसको छोड़ दिया और इस की पवित्र शिक्षाओं की परवाह नहीं की। नतीजा यह हुआ कि वह इस्लाम से बिलकुल दूर जा पड़े हैं। यहां तक कि अब यदि वास्तविक इस्लाम उनके सामने प्रस्तुत किया जाता है तो चूँकि वे इससे सम्पूर्ण रूप से अज्ञान और ग़ाफ़िल हैं,इस लिए सच्चे मोमिन को भी काफ़िर कह देते हैं ।

वली बनने के लिए ख़ुद तआला द्वारा प्रदन शक्तियों से काम लो।

बहुत से लोग हैं जो जानवरों जैसी और अय्याशाना हालाते ज़िन्दगी रखते हैं और वह दुनिया का गर्व दुनिया की इज़्ज़त और धन संपत्ति चाहते हैं। इस प्रकार की इच्छाओं और आशाओं और उनके पूरा करने की तदबीरों और तजवीज़ों में ही अपनी उम्र खो बैठते हैं। उनकी इच्छाओं की सचम सीमा नहीं होती कि मौत का सन्देश आ जाता है। अब उनको भी अल्लाह तआला ने शकित्यां तो दी थीं। उन्हीं शक्तियों से यदि काम लेते तो हक़ को पा लेते। अल्लाह तआला ने तो कंजूसी नहीं की,परन्तु उन्होंने शक्तियों से काम न लिया। यह उनकी अपना हत भाग्य है। नेक किस्मत और मुबारक है वह व्यक्ति जो इन शक्तियों से काम ले। बहुत से आदमी ऐसे भी हैं कि जब उनको कहा जाता है कि तुम ख़ुदा तआला से डरो और इसके आदेशों की पाबन्दी करो और मनाही से परहेज़ करो। तो वे कह देते हैं कि हम ने क्या वली बनना है? इस किस्म का बात मेरे निकट कुफ़्र है। ख़ुदा तआला पर कुधारणा है। ख़ुदा तआला के निकट क्या कमी है। वह कोई सरकार की सीमित नौकरियां तो नहीं हैं जो ख़त्म हो जाएं बल्कि जो कोई ख़ुदा तआला के

शेष पृष्ठ 10 पर

सदाक़त को स्वीकार करने के लिए खाने पीने में सादगी, सांसारिक लोभ और लालसा से बचना और बड़ी-बड़ी इच्छाओं से बचना ज़रूरी कार्य हैं । यदि कोई इन तीन बातों से नहीं बचता तो उसका सदाक़त (सच्चाई) की तलाश करना व्यर्थ कार्य है, यदि हक़ उस पर खुल जाएगा, तब भी वह उसके स्वीकार करने से वंचित रहेगा

सय्यदना हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु सूरत हिज्र आयत 4 ذَرْهُمْ يَاْكُلُوْا وَيَتَمَتَّعُوْا وَيُلْهِهِمُ الْاَمَلُ فَسَوْفَ يَعْلَمُوْنَ की तफ़सीर में फ़रमाते हैं :

इस आयत में बतलाया है कि ये लोग मुख़्तलिफ़ मसायल में इस्लाम की बरतरी तो स्वीकार करते हैं और करेंगे परन्तु फिर भी इस्लाम की तरफ़ क़दम उठाना नसीब नहीं होगा। यूरोप के लोग इस्लामी मसायल की बरतरी को मानते हैं परन्तु इस्लाम लाने के लिए तैयार नहीं क्योंकि सोसाइटी का प्रश्न है।

फ़रमाया वे अपने बुद्धि और मद्यपान की वजह से अपनी तिजारतों और उद्योगों की वजह से और अपनी बड़ी बड़ी इच्छाओं की वजह से मुस्लमान नहीं होते। इस में जबकि पहली आयत के अर्थ पर जो प्रश्न पैदा होता था, उस का जवाब दिया गया है अर्थात जब वे लोग ख़ाहिश करते हैं और करेंगे कि काश वे मुस्लमान होते तो वे मुस्लमान होते क्यों नहीं? फ़रमाया उनकी अय्याशी दौलत का लोभ लालसा और बड़ी बी बड़ी इच्छाएं उनके रास्ता में रोक बन रहे हैं।

इस आयत से यह सबक़ हासिल होताहै कि सदाक़त को स्वीकार करने के लिए खाने पीने में सादगी, सांसारिक लोभ लालसा से बचना और बड़ी बड़ी इच्छाओं से बचना ज़रूरी कार्य हैं। जो व्यक्ति सदाक़त का तलाश करने वाला हो उस के लिए इन से बचना ज़रूरी है। यदि कोई इन तीन बातों से नहीं बचता तो उस

शेष पृष्ठ 12 पर

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

प्रश्न उत्तर

सय्यदना हज़रत अमीरुल मौमिनीनन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ से पूछे जाने वाले महत्वपूर्ण प्रश्नों के उत्तर (भाग-4)

पिता की दुआओं से फ़ायदा उठाओ और उसकी बद्दुआ से बचो

शादी के बाद एक वाकिफ़ा नौ की बड़ी ज़िम्मेदारी यह है कि बच्चों की ऐसी तर्बीयत करे कि उनका अल्लाह से सम्बन्ध पैदा हो जाए, अपनी नई नसल को अहमदियत पर क़ायम करे और अल्लाह तआला से उसका सम्बन्ध जोड़े

प्रश्न :एक महिला ने हज़रत ख़लीफ़ उल-मसीह राबे रहमाहुल्लाह तआला की मज्लिस इर्फ़ान में वर्णित एक इरशाद के हवाले से चचा और मामूं से पर्दा करने के बारे में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ से रहनुमाई की दरख़ास्त की। जिस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने अपने पत्र तिथि 1 जून 2020 ई. में निमंलिखित उत्तर अता फ़रमाया। हुज़ूर ने फ़रमाया

उत्तर : आपने अपने पत्र में हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबे रहमहुल्लाह तआला के जिस इरशाद का वर्णन किया है वह सूरत उल-नूर की आयत नंबर 32 के हवाला से मज्लिस इर्फ़ान में एक प्रशन के उत्तर में वर्णित है।

यह बात दरुस्त है कि इस आयत में वर्णन रिश्ते जिनसे औरत को पर्दा न करने की रुख़स्त दी गई है, उनमें चचा और मामूं का वर्णन नहीं है लेकिन इन दोनों का शुमार मुहर्रम रिश्तों में ही होता है, जैसा कि हुज़ूर ने भी अपने इस इरशाद में फ़रमाया है। और सूरत अल् निसा में वर्णन क़ुरआन की हुक्म से भी यह साबित होता है क्योंकि इन दोनों से निकाह की हुर्मत वर्णन हुई है।

अतिरिक्त इसके अहादीस में हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा से मर्वी है कि उनके पूछने पर हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उन्हें चचा से पर्दा न करने का इरशाद फ़रमाया था। लेकिन इसके साथ पर्दा के बारह में यह बात भी पेश-ए-नज़र रहनी ज़रूरी है कि इस्लामी तालीमात के अनुसार मुहर्रम रिश्तों में भी हर दर्जा के रिश्ता से पर्दा में रुख़स्त की अलग कैफ़ीयत है। इसलिए सूरत अल् नूर में जिन मुहर्रम रिश्तेदारों से पर्दा न करने की छूट आई है, उनमें से भी हर रिश्ता की दूसरे रिश्ता से पर्दा की रुख़स्त की एक अलग सूरत होगी। इसलिए पति से पर्दा की जो रुख़स्त है वह उसी आयत में वर्णन पिता, बेटे और भाई इत्यादि से पर्दा की रुख़स्त से अलग है।

अत: जिस तरह इस आयत में वर्णन रिश्तेदारों से पर्दा की मुख़्तलिफ़ कैफ़यात हैं इसी तरह अन्य मुहर्रम रिश्तेदारों से भी पर्दा की रुख़स्त की कैफ़ीयत में अंतर है। और यही मज़मून हज़रत ख़लीफ़ तुल मसीह राबे रहमहुल्लाह तआला अपने मज़कूरा इरशाद में समझा रहे हैं कि चचा और मामूं जो एक ही घर में साथ रहने वाले रिश्तेदार नहीं बल्कि बाहर के लोग हैं, और यदि उनका शुमार मुहर्रम रिश्तेदारों में ही होता है, लेकिन जब वे घर में आएं तो महिलाएं जिस तरह उसी घर में साथ रहने वाले मर्दों जिन में ख़ावंद, बाप, बेटे इत्यादि शामिल हैं, से पर्दा निसबतन relax होती हैं, बाहर से आने वाले मुहर्रम मर्दों की सूरत में उन्हें निसबतन कुछ ज़्यादा सावधान होना चाहिए और यदि उनके सामने चेहरा तो नहीं ढका जाता लेकिन सिर और सीने को ढाँप कर और अपने आपको सँभाल कर उनके सामने बैठने का हुक्म है। अत: यह मज़मून है जो हुज़ूर रहमहुल्लाह तआला वर्णन फ़र्मा रहे हैं, न कि चचा और मामूं से पर्दा करने का हुक्म दे रहे हैं

(संकलनकर्ता ज़हीर अहमद ख़ान, विभाग रिकार्ड दफ़्तर प्राईवेट सैक्रेटरी लंदन)

(धन्यवाद् के साथ अख़बार अल्फ़ज़ल इंटरनैशनल13 नवंबर 2020)

प्रश्न : एक ख़ुतबा जुमा में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ के वर्णन फ़र्मूदा एक वाक़िया कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हज़रत क़तादा बिन नोमान को एक छड़ी अता फ़र्मा कर इरशाद फ़रमाया था कि इस से अपने घर में मौजूद जिन् को मार कर भगा देना' के बारे में एक महिला ने हुज़ूर अनवर की ख़िदमत अक़्दस में इस वाक़िया की मज़ीद वज़ाहत की दरख़ास्त की। जिस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने अपने पत्र तिथि 29 अगस्त 2019 ई. में इस वाक़िया की मज़ीद वज़ाहत करते हुए निमंलिखित उत्तर अता फ़रमाया। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया

उत्तर : हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की यह हदीस और ऐसी दूसरी अहादीस जिन में हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम या आपके सहाबा के लिए रोशनी के नमूदार होने के वाक़ियात का वर्णन है, वास्तव में हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के चमत्कारों पर आधारित हैं। और इस किस्म के चमत्कार अल्लाह तआला हर ज़माना में अपने नबियों की सदाक़त के लिए दिखाता रहा इस लिए आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से पहले के अनबया की ज़िंदगियों में भी ऐसे वाक़ियात मिलते हैं और हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के ग़ुलाम सादिक़ हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सदाक़त के लिए भी अल्लाह तआला ने ऐसे कई वाक़ियात को ज़ाहिर फ़रमाया।

जहां तक इस हदीस में जिन् या शैतान को छड़ी से मारने का सम्बन्ध है तो इस से यह साबित करना कि जिन इन्सानों के शरीर में घुस जाते हैं और उन्हें इस तरह मारने से इन्सानों के जिस्मों से निकाला जा सकता है, बिल्कुल ग़लग बात है।

इस हदीस में जिन् से मुराद कोई चोर या नुक़्सान पहुंचाने वाला कोई जानवर मुराद है जो रात के अंधेरे का फ़ायदा उठा कर हज़रत क़तादा बिन नोमान के घर घुस गया था। और जैसा कि अल्लाह तआला की य अह सुन्नत है कि वह अपने अंबिया को ग़ैरमामूली तौर पर इलम-ए-ग़ैब से नवाज़ता है, इस में भी अल्लाह तआला ने हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को पहले से ख़बर दे दी थी कि हज़रत क़तादा बिन नोमान के घर कोई चोर या नुक़्सान देने वाला जानवर छिपा हुआ है, इसलिए हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हज़रत क़तादा बिन नोमान को इस ख़तरे से अवगत फ़रमाते हुए उन्हें नसीहत की कि जब वह घर पहुंचीं तो उस छड़ी के साथ उस चोर या उस जानवर को मार कर भगा दें। इस लिए कुछ दूसरी कुतुब में इस वाक़िया की व्याख्या में यह बात भी वर्णन हुई है कि जब हज़रत क़तादा बिन नुमान रज़ियल्लाहु अन्हो घर पहुंचे तो उनके घर वाले सब सोए हुए थे और घर के एक कोना में एक स्याह छिपा हुआ था जिसे उन्होंने उस छड़ी से मार कर भगा दिया।

प्रश्न : एक दोस्त ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ की ख़िदमत अक़्दस में पूछा कि कारोबार में अलग-अलग किस्म के मुफ़ादात के हुसूल नीज़ आकस्मिक नुक़्सानात से बचने के लिए इंशोरंस करवाने के बारे में इस्लामी हुक्म क्या है? इस पर हुज़ूर अनवर ने अपने पत्र तिथि 11 अप्रैल 2016 ई. में जो उत्तर अता फ़रमाया, उसे निमंलिखित वर्णन किया जाता है। हुज़ूर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया :

उत्तर : इंशोरंस केवल वह जायज़ है जिस पर मिलने वाली रक़म नफ़ा-ओ-नुक़्सान में शिरकत की शर्त के साथ हो और उस में जुए की सूरत न पाई जाती हो। यदि केवल नफ़ा की भागीदारी की शर्त के साथ मिले तो सूद होने की वजह से नाजायज़ है।

इसी तरह यदि पालिसी होल्डर कंपनी के साथ ऐसा मुआहिदा कर ले कि वह केवल अपनी जमा शूदा रक़म वसूल करेगा और इस पर सूद नहीं लेगा तो ऐसी इंशोरंस करवाने में भी कोई हर्ज नहीं।

हज़रत मसीह मसीह मौऊद और महदी माहूद अलैहिस्सलाम ने इंशोरंस और बीमा के प्रश्न पर फ़रमाया : "सूद और जुए को अलग कर के दूसरे इक़रारों और ज़िम्मेदारियों को शरीयत ने सही क़रार दिया है। जुए में ज़िम्मेदारी नहीं होती। दुनिया के कारोबार में ज़िम्मेदारी की ज़रूरत है।" (अख़बार बदर नंबर 10 भाग 2, 27 मार्च 1903 ई. पृष्ठ 76)

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ियल्लाहु अन्हो ने अपनी एक तक़रीर में फ़रमाया : "यदि कोई कंपनी यह शर्त करे कि बीमा कराने वाला कंपनी के फ़ायदे और नुक़्सान में शामिल होगा तो फिर बीमा कराना जायज़ हो सकता है।"

(अल् फ़ज़ल 7 जनवरी 1930 ई.)

☆ ☆ ☆ ☆

☆ ☆ ☆

ख़ुत्बः जुमअः

चौदह हिज्री में हज़रत उमर फ़ारूक रज़ियल्लाहु अन्हो के दौर-ए-ख़िलाफ़त में मुस्लमानों और ईरानियों के मध्य क़ादसिया के स्थान पर एक निर्णायक जंग लड़ी गई जिसके परिणाम में ईरानी सलतनत मुस्लमानों के क़बज़ा में गई

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के महान ख़लीफ़ा राशिद फ़ारुके आज़म हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हो की विशेषताओं और गुणों का वर्णन

"अल्लाह तआला बुराई को बुराई से नहीं मिटाता बल्कि बुराई को नेकी से मिटाता है, अल्लाह तआला और बंदे के मध्य इताअत के सिवा और कोई रिश्ता नहीं है"

तुम ने एक मुश्किल और सख़्त काम का बीड़ा उठाया है अतः अपने नफ़्स को और अपने साथियों को नेकी की आदत डालो और इस के माध्यम से फ़तह चाहो और याद रखो कि हर आदत डालने का एक माध्यम होता है और नेकी की आदत डालने का माध्यम सब्र है"

(हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो)

बुवैब की जंग और क़ादसिया की जंग में पेश आने वाली घटनाओं का विस्तारपूर्वक वर्णन

क़ादसिया की जंग में ईरानी फ़ौज में से तीस हज़ार ज़ंजीरों में जकड़ी हुई थी ताकि किसी को दौड़ने का अवसर न मिले

हज़रत साद रज़ियल्लाहु अन्हो ने मुस्लमानों को सूरः अनफ़ाल पढ़ने का हुक्म दिया, जब तिलावत की गई तो मुस्लमानों ने संतुष्टि महसूस की

"यह अज़ीमुश्शान तग़य्युर मुस्लमानों में क्यों पैदा हुआ? इसी लिए कि क़ुरआन की तालीम ने उनके अख़लाक़ और उनकी आदात में एक इन्क़िलाब पैदा कर दिया था" (हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो)

"उनकी सिफ़्ली (निम्न कोटि की) ज़िंदगी पर उसने एक मौत तारी कर दी थी और उन्हें बुलंद किरदार और आला दर्जा के अख़लाक़ की सतह पर ला कर खड़ा कर दिया था।" (हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो)

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 23 जुलाई 2021 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِالْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَاالضَّآلِّيْنَ

आज कल हम हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो का वर्णन कर रहे हैं और उनके ज़माने में जो कुछ जंगें हुई थीं उनका वर्णन हो रहा था। इसी हवाले से आज भी बयान करूँगा। एक जंग बुवैब की जंग कहलाती है जो तेराह हिज्री में और कुछ इतिहासकारों के निकट यह सोला हिज्री में हुई। जस्र के स्थान पर या जस्र की जंग में जिसका पहले पिछले ख़ुतबा में वर्णन हो चुका है, मुस्लमानों की शिकस्त के बाद हज़रत मुसन्नी ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो को जंग के बारे में सूचना भिजवाई। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने क़ासिद को फ़रमाया कि अपने अस्हाब के पास वापस जाओ और उनको कहो कि इस्लामी लश्कर जहां है वहीं ठहरा रहे। जल्द ही इमदाद आती है।

(अल् अखबारुल तिवार अबू हनीफ़ा दीनूरी से पृष्ठ 166-167 प्रकाशन दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2001ई.)

जस्र की जंग में शिकस्त से हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो को सख़्त तकलीफ़ पहुंची। आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने समस्त अरब में ख़तीब भेजे जिन्हों ने पुरजोश तक़रीरों से सारे अरब में जोश भर दिया। अरब के क़बायल इस क़ौमी मार्का में शामिल होने के लिए जौक़ दर जौक़ आना शुरू हो गए। उनमें ईसाई क़बायल भी थे। केवल मुस्लमान ही नहीं थे बल्कि ईसाई क़बायल भी थे। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने मुस्लमानों का एक लश्कर इराक़ रवाना किया और हज़रत मुसन्नी ने भी इराक़ के सरहदी स्थानों से फ़ौज इकट्ठी कर ली। रुस्तम को जब इस की ख़बर मिली तो उसने मेहरान के साथ एक लश्कर मुस्लमानों के मुक़ाबला के लिए रवाना किया। हिरा एक स्थान है, एक शहर है जो कूफ़ा से तीन मील की दूरी पर है इस के क़रीब बौवेब, यह बौवेब जो है ये कूफ़ा के पास एक नहर है जो दरिया फुरात से निकलती है। इस स्थान पर दोनों हरीफ़ लड़ाई के लिए तैयार हुए। यह जंग रमज़ान के महीना में लड़ी गई। इस स्थान के क़रीब ही बाद में कूफ़ा शहर आबाद हुआ था। ईरानी जरनैल मेहरवान ने कहा हम दरिया पार कर के आएं या तुम आओगे? हज़रत मुसन्नी ने कहा तुम पार कर के आओ। पिछली जंग में मुस्लमान दरिया पार कर के गए थे। इस दफ़ा उन्होंने यह हिक्मत इअमली इख़तियार की कि उनको, ईरानियों को कहा कि तुम आओ। हज़रत मुसन्नी ने अपने लश्कर की तंज़ीम और लड़ाई के लिए तैयारी की और फिर उनके अलग अलग हिस्सों पर अनुभवी सरदार निर्धारित किए और अपने पसिद्ध घोड़े शमूस नामी पर सवार हो कर इस्लामी लश्कर की सफ़ों का चक्कर काट कर निरिक्षण किया और हर झंडे के पास ठहर कर जंग के बारे में हिदायात-ए-जंग दीं और वलवला ख़ेज़ शब्दों में उनके हौसले बढ़ाते हुए यूं फ़रमाया कि मुझे आशा है कि आज अरब पर तुम्हारी वजह से दाग़ नहीं लगेगा। ख़ुदा की क़सम मैं अपनी ज़ात के लिए आज वही कुछ पसंद करता हूँ जो तुम में से आम आदमी के लिए मेरी नज़र में पसंदीदा है अर्थात में और तुम बराबर हैं। और सर फ़रोशाँने-इस्लाम ने पुरजोश शब्दों से अपने महबूब क़ायद की आवाज़ पर पूरे जोश से लब्बैक कहा और क्यों न कहते जबकि उसने अपने हर कथनी और करनी में हमेशा ही उनसे निहायत मुंसिफ़ाना सुलूक रवा रखा था और राहत-ओ-तकलीफ़ दोनों में उनका साथ दिया था और किसी की मजाल नहीं थी कि वे उनकी किसी बात पर उंगली रख सके।

(तारीख़ तिब्री, भाग 2 पृष्ठ 372 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2012ई.) (मक़ाला "तारीख़-ए-इस्लाम बाद हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु' अज़ आदरणीय सय्यद मीर महमूद अहमद नासिर साहिब, पृष्ठ 23-24)(मोअज्जमुल बुल्दान, भाग 2 पृष्ठ 376) (मोअज्जमुल बुल्दान, भाग 1 पृष्ठ 607)

हज़रत मुसन्नी ने लश्कर को हिदायत की कि मैं तीन तक्बीरें कहूँगा। तुम तैयार और मुस्तइद हो जाना और चौथी तकबीर सुनते ही दुश्मन पर हमला कर देना। हज़रत मुसन्नी ने पहली मर्तबा नारा-ए-तकबीर बुलंद किया तो ईरानी फ़ौज ने जल्दी से हमला कर दिया। इसलिए मुस्लमानों ने भी जल्दी की और पहली तकबीर के बाद ही क़बीला बनू अजल के कुछ लोग अपनी सफ़ों से निकल कर मुक़ाबला के लिए बढ़े। इस तरह सफ़ों में विघ्न पैदा हो गया। हज़रत मुसन्नी ने एक व्यक्ति को संदेश देकर उनकी तरफ़ भेजा कि संदेश यह था कि अमीर-ए-लश्कर सलाम कहता है और कहता है कि आज मुस्लमानों को रुस्वा न करो। इस के बाद वह क़बीला सँभल गया। फिर एक शदीद जंग के बाद ईरानियों में भगदड़ पड़ गई। इस जंग में ईरानियों के मक़्तूलीन की संख्यां एक लाख बयान की जाती है। ईरानी लश्कर का सालार महरान भी इस जंग में क़तल हुआ। इस जंग को يَوْمُ الْاَعْشَار कहा जाता है क्योंकि इस जंग में सौ लोग ऐसे थे जिनमें से हर एक ने दस दस व्यक्तियों को क़तल किया था। ईरानी लश्कर शिकस्त खा कर पुल की तरफ़ भागाता कि दरिया पार कर के अपने महफ़ूज़ इलाक़े में चला जाए लेकिन हज़रत मुसन्नी ने अपना दस्ता लेकर उनका पीछा किया और पुल पार करने से पहले ही उनको घेर लिया और दरिया का पुल तोड़ कर बहुत से ईरानी फ़ौजियों को क़तल कर दिया। बाद में हज़रत मुसन्नी अफ़सोस का इज़हार फ़रमाया करते थे कि मैंने हारे हुए लोगों का पीछा क्यों किया? मुझे यह नहीं करना चाहिए था। आप फ़रमाते कि मुझसे बड़ी ग़लती हुई है। मेरे लिए ठीक नहीं कि मैं उनसे मुक़ाबला करूँ जो मुक़ाबले की ताक़त नहीं रखते थे। भविष्य में मैं कभी ऐसा नहीं करूँगा और फिर आपने मुस्लमानों को नसीहत की कि मुसलमानो! तुम भी कभी ऐसी हरकत न करना और इस मुआमला में मेरी पैरवी न करना। इस युद्ध में यह ग़लती मेरे से हो गई कि दौड़ते हुए लोगों का पीछा क्या यह नहीं होना चाहिए। असल में तो यह इस्लामी अख़लाक़

हैं। इस युद्ध में इस्लामी लश्कर के कुछ बड़े बड़े किरदार मसलन ख़ालिद बिन हलाल और मसऊद बिन हारिस भी शहीद हुए थे। हज़रत मुसन्नी ने शुहदा का जनाज़ा पढ़ाया और फ़रमाया ख़ुदा की क़सम मेरे दुख दर्द को यह बात हल्का करती है कि ये लोग इस जंग में शामिल हुए और उन्होंने जुर्रत और बहादुरी से काम लिया और साबित-क़दम रहे और उनको किसी किस्म की घबराहट और परेशानी नहीं हुई और फिर यह बात मेरे ग़म को हल्का करती है कि शहादत गुनाहों की माफ़ी के लिए कफ़्फ़ारा बन जाती है।

इस जंग के वर्णन में इतिहासकारों एक वाक़िया बयान करते हैं जिस से मुस्लमान महिलाओं की हिम्मत-ओ-दिलेरी पर रोशनी पड़ती है। मैदान-ए-जंग से दूर स्थान कवादस पर इस्लामी लश्कर की महिलाओं और बच्चों का कैंप था। लड़ाई के अंत पर जब मुस्लमानों का एक दस्ता घोड़े दौड़ाता हुआ कैंप के सामने पहुंचा तो मुस्लमान महिलाओं को यह ग़लतफ़हमी हुई कि यह दुश्मन की फ़ौज है जो हम पर हमला करने आई है। उन्होंने बड़ी तेज़ी से बच्चों को तो घेरे में ले लिया और ख़ुद पत्थर और चौबें लेकर मरने मारने पर तुल गए। फ़ौजी दस्ता के क़रीब पहुंचने पर उनको यह मालूम हुआ कि यह तो मुस्लमान हैं तो इस पार्टी के राहनुमा अम्र बिन अब्दुल मसीह ने सहसा कहा कि अल्लाह के लश्कर की महिलाओं को यही ज़ेबा है।

मार्का बुवेब ख़त्म हो गया परन्तु अपने पीछे गहरे निशानात और गहरे असरात छोड़ गया। ईरान की इस्लामी मुहिम में इस से क़बल कभी इतना जानी नुक़्सान नहीं हुआ था। इस मार्का का यह असर हुआ कि इराक़ के अक्सर निकट में मुस्लमानों के पांव मज़बूत हो गए और सवाद इराक़ पर दजला तक उनका क़बज़ा हो गया और मामूली झड़पों के बाद इर्द-गिर्द के इलाक़ों पर भी मुस्लमान पुन: क़ाबिज़ हो गए जो पहले छोड़ गए थे और ईरानी फ़ौजों ने इस में ख़ैरीयत देखी कि पराजित हो कर दजला के दूसरे किनारे पर जा उतरें। इस फ़तह के बाद मुस्लमान इराक़ के मुख़्तलिफ़ इलाक़ों में फैल गए।

(तारीख़ तिब्री, भाग 2 पृष्ठ 373 - 374 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2012 ई.) (उद्धरित सीरत अमीरुल मोमेनीन उमर बिन ख़त्ताब अज़ सलाबी, पृष्ठ 361 से 363 दारुल मारूफ़ बेरूत 2007 ई.)(उद्धरित फ़ारूक अज़ शिबली नुमानी, पृष्ठ 82 से 84 विभाग इस्लामियात 2004 ई.)(उद्धरित अल्कामिल फ़िल तारीख़, भाग 2 पृष्ठ 288 से 291 सन् 13 हिज्री, ज़िक्र वुकअतुल बुयू, दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2006 ई.)(उद्धरित तारीख़ तिब्री अनुवादक, भाग 2, हिस्सा 2, पृष्ठ 237-238-240-241 नफ़ीस एकेडेमी कराची 2004 ई.)(मक़ाला "तारीख़-ए-इस्लाम बाद हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु" आदरणीय सय्यद मीर महमूद अहमद नासिर साहिब, पृष्ठ 28-29)

फिर क़ादसिया की जंग हुई जो चौदह हिज्री में हुई। क़ादसिया मौजूदा इराक़ में एक स्थान है और कूफ़ा से पैंतालीस मील की दूरी पर स्थित है। चौदह हिज्री में हज़रत उमर फ़ारूक रज़ियल्लाहु अन्हो के दौर-ए-ख़िलाफ़त में मुस्लमानों और ईरानियों के मध्य क़ादसिया के स्थान पर एक निर्णायक जंग लड़ी गई जिसके परिणाम में ईरानी सलतनत मुस्लमानों के क़बज़ा में आ गई। जब अहले फ़ारस को मुस्लमानों के कारनामों का इल्म हुआ तो उन्होंने रुस्तम और फ़ैरोज़ान से जो उन के दो सरदार थे कहा कि तुम दोनों आपस में इख़तिलाफ़ करते रहे और तुम दोनों ने अहल अफ़ारस को कमज़ोर कर के दुश्मन के हौसले बढ़ा दिए हैं। अब मुआमला इस हद तक पहुंच गया है कि यदि हम यूंही रहते हैं तो ईरान तबाह हो जाएगा क्योंकि बग़दाद, साबात जो मदायन के क़रीब स्थान है और तिकरीत जो बग़दाद और मूसल के मध्य बग़दाद से तीस फ़र्सख़ (दूरी का पैमाना जो 3 मील की दूरी के बराबर हो) या नौवे मील की दूरी पर एक पसिद्ध शहर है। इस के बाद अब केवल मदायन शहर ही बाक़ी बचा है। उन्होंने कहा कि यदि तुम दोनों सहमत न हुए तो पहले हम तुम दोनों को हलाक करेंगे फिर ख़ुद हलाक हो कर सुकून हासिल कर लेंगे अर्थात फिर हम जंग ख़ुद ही करेंगे। रुस्तम और फ़ैरौज़ान ने बूरान को हटा कर के यज़दज्र को तख़्त पर बिठा दिया जो उस वक़्त इक्कीस वर्ष का था। समस्त क़िलों और फ़ौजी छावनियों को मुस्तहकम कर दिया गया। हज़रत मुसन्नी ने जब अहले अफ़ारस की इन सरगर्मीयों से हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो को अवगत किया तो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने फ़रमाया कि ख़ुदा की क़सम! मैं अजम वाले के बादशाहों का मुक़ाबला अरबों के सरदारों और बादशाहों से कराऊँगा। इस लिए हर रईस, राए देने वाला, मुअज़्ज़िज़, ख़तीब और शायर को मुक़ाबले के लिए रवाना किया गया तथा हज़रत मुसन्नी को हुक्म दिया कि वह अजमी इलाक़े से निकल कर उन साहिली इलाक़ों में आ जाएं जो तुम्हारी और उनकी हदूद के पास हैं। क़बीला रबीया और मुज़र् के लोगों को भी साथ शामिल करने का हुक्म दिया।

(उद्धरित अल्कामिल फ़ी तारीख़ भाग 2 पृष्ठ 294 से 295 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2006 ई.) (फ़र्हंग सीरत, पृष्ठ 229) (मोअज्जमुल बुल्दान, भाग 3 पृष्ठ 187) (मोअज्जमुल बुल्दान, भाग 2 पृष्ठ 45)

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने अरब में चारों तरफ़ संदेशक भेजे और सरदारोँ औरअमीरों को मक्का में जमा होने के लिए फ़रमाया। चूँकि हज क़रीब आ चुका था तो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो हज के लिए रवाना हुए। हज के दौरान अरब क़बायल हर तरफ़ से जमा हो गए। जब आप रज़ियल्लाहु अन्हो हज से वापस तशरीफ़ लाए तो मदीना में एक बड़ा लश्कर जमा था। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने इस लश्कर की कमान ख़ुद संभाली और हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो को मदीना में अमीर निर्धारित कर के रवाना हुए और सिरार में पड़ाव डाला। (सिरार मदीना से तीन मील की दूरी पर एक चशमा है कहते हैं कि अभी हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो का ख़ुद महाज़-ए-जंग पर जाने का निश्चित निर्णय नहीं हुआ था।

(उद्धरित फ़ारुक अज़ शिबली नुमानी, पृष्ठ 85 से 86 विभाग इस्लामियात 2004 ई.)(फ़र्हंग सीरत, पृष्ठ 172)

लश्कर ले के रवाना तो हो गए थे लेकिन निर्णय नहीं किया था कि ख़ुद जाऐंगे या आगे जा के किसी और को कमांडर बना के रवाना करेंगे। बहरहाल तारीख़ तिब्री में है कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने लोगों से मश्वरा किया। सब ने आप रज़ियल्लाहु अन्हो को फ़ारस जाने का मश्वरा दिया। उन्होंने कहा सारे लश्कर को अपनी कमान में ही लेकर जाएं। सिरार आने तक हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने किसी से मश्वरा नहीं किया था लेकिन हज़रत अब्दुर्रहमान रज़ियल्लाहु अन्हो उन लोगों में से थे जिन्हों ने आप रज़ियल्लाहु अन्हो को जाने से रोका। अन्य लोगों ने तो कहा कि ज़रूर लश्कर ले के जाएं लेकिन हज़रत अब्दुर्रहमान रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा नहीं। हज़रत अब्दुर्रहमान रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा कि आज से पहले मैं ने नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के सिवा किसी पर अपने माँ बाप को क़ुर्बान नहीं किया और न आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के बाद कभी ऐसा करूँगा परन्तु आज मैं कहता हूँ कि हे वह कि जिस पर मेरे माँ बाप हूँ! इस मुआमला का आख़िरी निर्णय आप रज़ियल्लाहु अन्हो मुझ पर छोड़ दें। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो को उन्होंने कहा और फिर उन्होंने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो को मश्वरा दिया कि आप रज़ियल्लाहु अन्हो सिरार स्थान पर ही रुक जाएं और एक बड़े लश्कर को यहां से रवाना फ़र्मा दें। फिर उन्होंने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो को कहा कि शुरू से लेकर अब तक आप रज़ियल्लाहु अन्हो देख चुके हैं कि आप रज़ियल्लाहु अन्हो के लश्करों के सम्बन्ध में अल्लाह तआला का क्या निर्णय रहा है। यदि आप रज़ियल्लाहु अन्हो की फ़ौज ने शिकस्त खाई तो वे आप रज़ियल्लाहु अन्हो की शिकस्त की मानिंद न होगी। यदि आरंभ में आप रज़ियल्लाहु अन्हो शहीद हो गए या शिकस्त खा गए तो मुझे अंदेशा है कि फिर कभी मुस्लमान न तकबीर पढ़ सकेंगे और न ही ला-इलाहा इल्लल्लाहा की गवाही दे सकेंगे। कुछ और सम्मानित राए देने वाले अस्हाब की मज्लिस-ए-शूरा के बाद हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने एक आम जलसा आयोजित किया। जब उनको हज़रत अब्दुर्रहमान रज़ियल्लाहु अन्हो का यह मश्वरा मिल गया तो फिर उस के बाद कुछ लोगों से मश्वरा किया और इस के बाद एक जल्सा-ए-आम आयोजित किया जिसमें तक़रीर करते हुए हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला ने लोगों को इस्लाम पर जमा कर दिया है और उनके दिलों में एक दूसरे का प्रेम पैदा कर दिया है और इस्लाम ने सबको भाई भाई बना दिया है और मुस्लमानों की आपसी हालत जिस्म की तरह है कि एक हिस्सा को तकलीफ़ हो तो दूसरा भी इस को महसूस किए बग़ैर नहीं रह सकता। लिहाज़ा मुस्लमानों के लिए ज़रूरी है कि उनके मुआमलात आपसी मश्वरे से फ़ैसल हुआ करें। विशेषता उनमें से समझदार लोगों का मश्वरा ले लिया जाया करे और लोगों के लिए ज़रूरी है कि जिस कार्य पर सहमत और राज़ी हो जाएं उस की पैरवी और इताअत करें और अमीर के लिए ज़रूरी है कि वह लोगों में से राए रखने वालों के मश्वरे को मंज़ूर करे और लोगों के सम्बन्ध में उन की जो राय हो और जंगों के सम्बन्ध में जो उन की तदबीर हों। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने फ़रमाया लोगो! मैं तुम्हारी तरह एक फ़र्द बन कर तुम्हारे साथ होना चाहता था, जंग में शामिल होना चाहता था परन्तु तुम्हारे राए देने वाले लोगों ने मुझे इस से रोका है। इसलिए अब मैंने निर्णय किया है कि मैं न जाऊं

और किसी और व्यक्ति को भेज दूं।

(तारीख़ तिब्री, भाग 2 पृष्ठ 381 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2012 ई.) (मक़ाला "तारीख़-ए-इस्लाम बाद हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु" आदरणीय सय्यद मीर महमूद अहमद नासिर साहिब, पृष्ठ 35 से 37)

उस वक़्त हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो किसी व्यक्ति की तलाश में थे। इसी दौरान उनकी ख़िदमत में हज़रत साऊद का पत्र आया। हज़रत साद रज़ियल्लाहु अन्हो उस वक़्त नजद के सदक़ात पर मामूर थे। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने फ़रमाया कि मुझे कोई आदमी बताओ जिसको कमांडर बनाया जाए। हज़रत अब्दुर्रहमान रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा कि आदमी तो आपको मिल गया है। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने पूछा वह कौन है? हज़रत अब्दुर्रहमान रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा कि कछार का शेर साद बिन मालक रज़ियल्लाहु अन्हो अर्थात साद बिन अबी वक्कास रज़ियल्लाहु अन्हो। बाक़ी लोगों ने भी इस मश्वरे का समर्थन किया। (तारीख़ तारीख़ तिब्री, भाग 2 पृष्ठ 382 बाब अम्रुल अल्कादसिया दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 1987 ई.)

तारीख़ तिब्री में है कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने हज़रत साद रज़ियल्लाहु अन्हो को अमीर निर्धारित फ़र्मा कर नसीहत फ़रमाई कि हे साद तुम को यह गुमान न हो कि तुम को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का मामूं और सहाबी कहा जाता है क्योंकि अल्लाह तआला बुराई को बुराई से नहीं मिटाता बल्कि बुराई को नेकी से मिटाता है। अल्लाह तआला और बंदे के मध्य इताअत के सिवा और कोई रिश्ता नहीं है। रवानगी के वक़्त हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने हज़रत साद रज़ियल्लाहु अन्हो को यह नसीहत फ़रमाई और आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने फ़रमाया मेरी नसीहत को याद रखना। एक और नसीहत यह फ़रमाई कि तुम ने एक मुश्किल और सख़्त काम का बीड़ा उठाया है। अत: अपने नफ़्स को और अपने साथियों को नेकी की आदत डालो और उनके माध्यम फ़तह चाहो और याद रखों कि हर आदत डालने का एक माध्यम होता है और नेकी की आदत डालने का माध्यम सब्र है। सब्र करोगे तो नेकी की आदत पड़ेगी। अत: हर मुसीबत जो तुम्हें पहुंचे और तकलीफ़ जो तुम पर आए इस पर सब्र करो। इस से अल्लाह तआला का ख़ौफ़ तुम्हें हासिल होगा।

(तारीख़ तिब्री अनुवादक, भाग 2, पृष्ठ 253-254 नफ़ीस एकेडेमी कराची 2004 ई.)

फिर आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने फ़रमाया अपने साथी मुस्लमानों को लेकर शराफ़ से ईरान की तरफ़ मार्च करो। शराफ़ में पानी का एक चशमा है। इस स्थान से आपने कहा कि यहां से फ़ौज इकट्ठी हुई है और यहां से शुरू कर दो। अल्लाह तआला पर तवक्कुल करो और अपने समस्त उमूर में इसी से सहायता चाहो और याद रखो कि तुम इस क़ौम के मुक़ाबला के लिए जा रहे हो जिनकी संख्यां बहुत ज़्यादा है। साज़ो सामान बड़ी कसरत से है। जंगी ताक़त निहायत मज़बूत है और ऐसे इलाक़े के मुक़ाबले के लिए जा रहे हो जो जंगी लिहाज़ से सख़्त और महफ़ूज़ है और जबकि अपनी ज़रख़ेज़ी और सैराबी के कारण उम्दा इलाक़ा है और देखो उनके धोखे में न आ जाना क्योंकि वे चालाक और धोखा देने वाले लोग हैं और जब तुम क़ादसिया पहुँचो तो तुम लोग पहाड़ी इलाक़े के आख़िरी किनारे और मैदानी इलाक़े के शुरू किनारे पर होगे। अत: तुम उस जगह पर ही ठहरे रहना और वहां से न हटना, जगह भी बता दी कि वहीं रहना। जब दुश्मन को तुम्हारे आने का इलम होगा तो वह मुश्तइल होंगे और अपने समस्त रिसालों और पेदल फ़ौजों और पूरी क़ुव्वत के साथ तुम पर आक्रमण करेंगे। इस सूरत में यदि तुम दुश्मन के सामने पूरी साबित क़दमी से जमे रहोगे और तुम्हें दुश्मन से लड़ाई में सवाब की ख़ाहिश होगी और तुम्हारी नीयत ठीक होगी तो मुझे आशा है कि तुम्हें उन पर ग़लबा हासिल होगा और फिर वे कभी इस तरह जमा हो कर तुम्हारा मुक़ाबला नहीं कर सकेंगे और यदि हुए भी तो उनके क़ुलूब उनके साथ नहीं होंगे। डरे हुए दिलों के साथ मुक़ाबला करेंगे। और यदि कोई दूसरी सूरत पैदा हो गई तो तुम ईरानी इलाक़े के क़रीब तरीन मैदानों से हट कर अर्थात यदि पीछे हटने की सूरत पैदा होती है, शिकस्त की सूरत पैदा होती है तो क़रीब तरीन मैदानों से हट कर अपने इलाक़े के क़रीब तरीन पहाड़ों में आ जाओगे। इस के परिणाम मैं तुम्हें अपने इलाक़े में ज़्यादा जुर्रत होगी और इस इलाक़े से तुम ज़्यादा वाक़िफ़ होगे और ईरानी तुम्हारे इलाक़े में ख़ौफ़ज़दा होंगे और उन्हें इस इलाक़े से न वाक़फ़ीयत भी होगी यहां तक कि ख़ुदा तआला दुबारा उनके ख़िलाफ़ तुम्हारी फ़तह का अवसर पैदा करे। आपको यह विशवास था कि फ़तह तो होनी है यदि अस्थाई तौर पर कोई ऐसे हालात पैदा भी हो जाते हैं तब भी आख़िरी फ़तह तुम्हारी है। उद्देश्य इस लश्कर की समस्त नक़ल-ओ-हरकत हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो के मदीना से आने वाले तफ़सीली अहकाम के अनुसार हो रही थी। इस लिए तिब्री ने लिखा है कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने शराफ़ से लश्कर की रवानगी की तारीख़ भी निर्धारित फ़र्मा दी थी और यह भी हिदायत की कि क़ादसिया पहुंच कर लश्कर का क़ियाम उज़ैबुल हजानात और उज़ैबुल क़वादिस के स्थानात के मध्य हो और यहां पर लश्कर को पूर्व से पश्चिम फैला दिया जाए। उजेब क़ादसिया और मुग़ीसा के रस्ता में पानी का एक घाट है जो क़ादसिया से चार मील की दूरी पर और मुगेशिया बत्तीस मील की दूरी पर है। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो के हज़रत साद बिन अबी वक्कास रज़ियल्लाहु अन्हो के नाम ख़त से मालूम होता है कि वहां दो उजेब थे। यह भी तारीख़ से पता लगता है।

(तारीख़ तिब्री, भाग 2 पृष्ठ 386 - 387 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2012 ई.) (मक़ाला "तारीख़-ए-इस्लाम बाद हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु" अज़ आदरणीय सय्यद मीर महमूद अहमद नासिर साहिब, पृष्ठ 48 से 50)(मोअज्जमुल बुल्दान, भाग 3 पृष्ठ 131) (मोअज्जमुल बुल्दान, भाग 3 पृष्ठ 304)

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने हज़रत साद बिन अबी विक़ास रज़ियल्लाहु अन्हु को चार हज़ार मुजाहिदीन के साथ ईरान की तरफ़ भेजा। बाद में दो हज़ार यमनी, दो हज़ार नज्दी भी जा मिले। रास्ता में बनू असद के तीन हज़ार लोग और अशअत बिन केस कुन्दिया एक हज़ार सात सौ यमनी सिपाहियों के साथ शामिल हुए। मुस्लमानों के पास या पहले भी लश्कर था और इस लश्कर की संख्यां आहिस्ता-आहिस्ता फिर वहां तीस हज़ार से ज़ायद हो गई। इस फ़ौज की एहमीयत का अनुमान इस से हो सकता है कि इस में निनानवे ऐसे सहाबी थे जो आंहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के साथ ग़ज़वा-ए-बदर में शामिल हो चुके थे। तिब्री ने उनकी संख्यां सत्तर से ज़ायद बयान की है। तीन सौ दस से ज़ाइय वे थे जिन्हें इब्तदाए इस्लाम से लेकर बैअत रिज़वान तक आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सोहबत का शरफ़ हासिल हो चुका था। तीन सौ ऐसे अस्हाब थे जो फ़तह मक्का में शामिल थे। सात सौ ऐसे थे जो ख़ुद सहाबी नहीं थे लेकिन सहाबा की औलाद होने का फ़ख़र उन्हें हासिल था। हज़रत साद बिन अबी वक्कास रज़ियल्लाहु अन्हु ने शराफ़ पहुंच कर पड़ाव किया। मुसन्नी आठ हज़ार व्यक्तियों के साथ स्थान ज़ूकार जो कूफ़ा के क़रीब पानी का एक घाट है इस पर मुस्लमानों की कुमक का इंतिज़ार कर रहे थे कि इसी समय में उनका इंतिक़ाल हो गया। उन्होंने बशीर बिन ख़सासिया को अपना जांनशीन निर्धारित किया। (उद्धरित अल्कामिल फ़िल तारीख़ भाग 2 पृष्ठ 299-302 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2006 ई.)(मोअज्जमुल बुल्दान, भाग 4 पृष्ठ 333)

मुसन्ना तो वहां फ़ौत हो गए। शराफ़ पहुंच कर हज़रत साद ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो को लश्कर के क़ियाम के विस्तार से हालात भिजवाए। इस पर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने लश्कर की तर्तीब ख़ुद निर्धारित फ़रमाई और ख़त में तहरीर फ़रमाया कि समस्त लश्कर को दस दस मुजाहिदीन को एहज़ाब में तक़सीम कर के उन पर एक एक निगरान निर्धारित कर दो और उन दस्तों पर एक बड़ा अफ़्सर निर्धारित कर देना। फिर उनकी संख्यां का हिसाब कर के उनको क़ादसिया की तरफ़ रवाना कर देना। अपनी कमान में मुग़ीरा बिन शोबा के दस्ता को रखना। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने साद को यह हिदायत फ़रमाई कि मुग़ीरा बिन शोबा को, इस के दस्ता को अपनी कमान में रखना। इस के बाद के हालात की तफ़सील मुझे रवाना करना और फिर जो प्रतिदिन की development होगी या जो हालात पैदा होंगे मुझे बताते रहना। हज़रत साद रज़ियल्लाहु अन्हो ने इन हिदायात के अनुसार लश्कर की तर्तीब लगाई और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो को विस्तार से हालात लिखे। हर दस व्यक्तियों पर निगरान निर्धारित करना उसी निज़ाम के अधीन था जो नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के समय में प्रचलित था।

(तारीख़ तिब्री, भाग 4 पृष्ठ 115-116 दारुल फ़िक्र 2002 ई.)

एक और ख़त में हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने हज़रत साद रज़ियल्लाहु अन्हो को तहरीर फ़रमाया कि अपने दिल को नसीहत करते रहो और अपनी फ़ौज को वाज़-ओ-नसीहत करते रहो। सब्र इख़तियार करो। सब्र इख़तियार करो क्योंकि ख़ुदा तआला की तरफ़ से बदला नीयत के अनुसार मिलता है। जो ज़िम्मेदारी तुम्हारे सपुर्द है और जो काम तुम करने जा रहे हो उस में पूरी सावधानी से काम करो। ख़ूब सावधानी से काम करो। ख़ुदा से आफ़ियत चाहो और لَاحَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰہِ कसरत से पढ़ा करो। मुझे तहरीर करो कि तुम्हारा लश्कर कहाँ तक पहुंच गया है और तुम्हारे मुक़ाबले में दुश्मन का सिपहसालार कौन निर्धारित किया गया है क्योंकि कुछ हिदायात जो मैं तहरीर करना चाहता था केवल इस कारण से तहरीर नहीं कर

सका कि मुझे तुम्हारे और तुम्हारे दुश्मन के कुछ कवायफ़ का पूरी तरह इलम नहीं। सारे कवायफ़ भेजो। फिर मैं तुम्हें मज़ीद हिदायात दूँगा। अत: मुस्लमानों के लश्कर की मनाज़िल मेरे पास तफ़सील के साथ लिख भेजो और इस इलाक़े की कैफ़ीयत जो तुम्हारे मध्य और ईरानी दारुल हकूमत मदायन के मध्य है इस तरह लिख भेजो कि जैसे कि मुझे आँखों से नज़र आ जाए अर्थात पूरी बारीकी से सारी तफ़सील लिखो और अपनी समस्त कैफ़ीयत मुझे वज़ाहत से तहरीर करो और ख़ुदा तआला से डरो और इस से आशा रखो और अपने काम के सिलसिला में उसी पर तवक्कुल करो और इस बात से डरते रहो कि ख़ुदा तुम्हें हटा कर कोई और क़ौम यह काम सरअंजाम देने के लिए ले आए।

(तारीख़ तिब्री, भाग 2 पृष्ठ 387 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2012 ई.) (मक़ाला "तारीख़-ए-इस्लाम बाद हज़रत उम्र रज़ियल्लाहु अन्हु" अज़ आदरणीय सय्यद मीर महमूद अहमद नासिर साहिब, पृष्ठ 50-51)

अर्थात हमेशा ख़ुदा का तुम्हें ख़ौफ़ रहना चाहिए। यह नहीं कि तुम्हारा कोई ठेकेदार बना दिया। यदि तुमने ये ज़िम्मेदारी न संभाली तो ख़ुदा तआला तुम्हें इस काम से हटा देगा और कोई इस काम को सरअंजाम देने के लिए ले आएगा और यह काम तो बहरहाल होना है।

क़ादसिया पहुंच कर हज़रत साद रज़ियल्लाहु अन्हो ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो को अपने लश्कर के क़ियाम और हदूद अर्बा के सम्बन्ध में विस्तार से लिख कर भेजा। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने जवाब तहरीर फ़रमाया कि अपनी जगह पर मुक़ीम रहो यहां तक कि दुश्मन ख़ुद हमला-आवर हो और यदि दुश्मन को शिकस्त हो गई तो मदायन तक पेशक़दमी करना।

(तारीख़ भाग 4 पृष्ठ 117-118 दारुल फ़िक्र 2002 ई.)

हज़रत साद रज़ियल्लाहु अन्हो के विषय में यह बयान हो चुका है लेकिन यहां हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो के हवाले से भी बयान करना ज़रूरी है कि हज़रत साद रज़ियल्लाहु अन्हो ने दरबार-ए-ख़िलाफ़त की हिदायत के अनुसार क़ादसिया में एक माह क़ियाम किया। जबकि ईरानियों में से कोई भी उनके मुक़ाबले के लिए नहीं आया। इस पर इस इलाक़े के लोगों ने ईरान के बादशाह यज़दजर्रद के नाम ख़त लिखा कि अरब वाले कुछ अरसा से क़ादसिया में मुक़ीम हैं और आप लोगों ने उनके मुक़ाबले के लिए कुछ नहीं किया। उन्होंने फुरात तक का इलाक़ा बर्बाद कर दिया है, मवेशी इत्यादि लूट लिए हैं। यदि सहायता न आई तो हम सब कुछ उनके हवाले कर देंगे। इस ख़त के बाद यज़दजर्रद ने रुस्तम को बुलाया और वह हीले बहानों से जंग में शिरकत से पीछे हटने का बहाना करता रहा। रुस्तम बचता रहा और अपनी जगह जालीनूस को फ़ौज का सिपहसालार निर्धारित करने का मश्वरा दिया परन्तु बादशाह के सामने रुस्तम की एक नहीं चली और उसे लश्कर को साथ लेकर जाना पड़ा।

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने हज़रत साद रज़ियल्लाहु अन्हो को लिखा कि रुस्तम के पास दावत-ए-इसलाम देने के लिए तुम ऐसे लोगों को भेजो जो दर्द रखने वाला, अक़लमंद और बहादुर हो। यूंही जंग नहीं कर देनी। दुश्मन को भी दावत-ए-इसलाम देनी है और फ़रमाया कि अल्लाह तआला इस दावत को उनकी तौहीन और हमारी सफ़लता का माध्यम बनाएगा। तुम प्रतिदिन मुझे ख़त लिखते रहो। इसके बाद हज़रत साद रज़ियल्लाहु अन्हो ने चौदह नमी व्यक्तियों को मुंतख़ब कर के दरबार-ए-ईरान में सफ़ीर बना कर भेजा ताकि वे ईरान के बादशा यज़दजर्रद को दावत-ए-इसलाम दें। मुस्लमान घोड़ों पर सवार थे। इन मुस्लमानों पर चादरें थीं और उनके हाथों में कूड़े थे। सबसे पहले हज़रत नोमान बिन मुक़र्रिन ने बादशाह से बात की। फिर मुग़ीरा बिन ज़ुराह ने। मुग़ीरा ने बादशाह से यह कहा कि तुम्हारे साथ या तो जंग होगी या फिर तुम्हें जिज़्या (कर जो उनकी जीवन और संपत्ति की सुरक्षा के लिए लिया जाए) देना होगा। अब तुम्हारे इख़तियार में है कि हमारे अधीन रहना स्वीकार करते हुए जिज़्या (कर जो उनकी जीवन और संपत्ति की सुरक्षा के लिए लिया जाए) दो या फिर जंग के लिए तैयार रहो। जबकि एक तीसरी बात भी है। यदि इस्लाम स्वीकार कर लोगे तो हर चीज़ से अपने आपको महफ़ूज़ कर लोगे। इस पर यज़दजर्रद ने कहा कि यदि क़ासिदों को क़तल करना मना न होता तो मैं तुम सबको क़तल कर देता। मेरे पास तुम्हारे लिए कुछ नहीं है। दौड़ जाओ यहां से। फिर उसने मिट्टी का एक टोकरा मंगवा कर कहा कि मेरी तरफ़ से यह ले जाओ और उसने हुक्म दिया कि इन क़ासिदों को मदायन के दरवाज़े से बाहर निकाल दो। आसिम बिन अम्र ने वह मिट्टी ली और जा कर हज़रत साद रज़ियल्लाहु अन्हो को देते हुए कहा कि ख़ुशख़बरी हो अल्लाह तआला ने हमें इस देश की चाबियाँ अता कर दी हैं। इस वाक़िया के बाद कई महीने तक दोनों तरफ़ ख़ामोशी रही। रुस्तम अपनी फ़ौज के साथ साबात में पड़ा रहा और यज़दजर्रद ताकीद के बावजूद जंग से जी चुराता रहा। यज़दजर्रद को बार-बार लोगों ने कहा कि हमारी हिफ़ाज़त करें अन्यथा हम अरब वाले के मुतीअ हो जाऐंगे। इस पर मजबूर हो कर रुस्तम को मुक़ाबले के लिए बढ़ना पड़ा और ईरानी फ़ौजें साबात से निकल कर क़ादसिया के मैदान में ख़ेमा-ज़न हुईं। रुस्तम जब साबात से निकला तो उस के लश्कर की संख्यां एक लाख बीस हज़ार थी और उस के साथ तेंतीस हाथी थे। रुस्तम ने मदायन से कादिसया पहुंचने तक चार माह का अरसा लगाया। रुस्तम ने क़ादसिया में पड़ाव डालने के बाद अगली सुबह इस्लामी लश्कर का जायज़ा लिया और मुस्लमानों को वापस जाने और सुलह की पेशकश की। रुस्तम ने मुस्लमानों को कहा सुलह कर लो और वापस चले जाओ जिसका जवाब मुस्लमानों की तरफ़ से यह दिया गया कि हम सांसारिक इच्छा के लिए नहीं आए बल्कि हमारा मक़सद आख़िरत है। रुस्तम ने मुतालिबा किया कि उस के दरबार में मुस्लमानों की तरफ़ से संदेशक बात चीत के लिए आएं। रुस्तम के दरबार में उम्दा और क़ीमती क़ालीन बिछाए गए और मुकम्मल संसाधनों का इंतिज़ाम किया गया। रुस्तम के लिए सोने का तख़्त बिछाया गया और इस पर क़ालीन बिछा कर और सोने के धागों से तैयार करदा तकिए लगा कर ख़ूब सुन्दर किया गया। मुस्लमानों की ओर से सबसे पहले हज़रत रबी बिन आमिर रज़ियल्लाहु अन्हो गए। वह रुस्तम की तरफ़ इस हाल में गए कि अपने नेज़े का सहारा लेते हुए छोटे छोटे क़दम उठाते रहे जिससे नेज़े की नोक से क़ालीन और गद्दे फटते चले जाते थे। वह रुस्तम के पास पहुंचे और नीचे बैठ कर अपना नेज़ा क़ालीन में गाड़ दिया। हज़रत रबी ने तीन बातें रुस्तम के सामने कि (1) आप लोग इस्लाम ले आएं हम आपका पीछा छोड़ देंगे और आपके मुल्क से भी हमें कोई सरोकार नहीं होगा। फिर ठीक है देश को सँभाल लो। (2) हमें जिज़्या (कर जो उनकी जीवन और संपत्ति की सुरक्षा के लिए लिया जाए) दें जिसे स्वीकार कर के हम आपकी हिफ़ाज़त करेंगे। जिज़्या (कर जो उनकी जीवन और संपत्ति की सुरक्षा के लिए लिया जाए) दे दो तो फिर हम तुम्हारी हिफ़ाज़त भी करेंगे। (3) यदि कोई भी सूरत मंज़ूर न हो तो फिर चौथे दिन आपसे लड़ाई होगी। इन तीन दिनों में हमारी तरफ़ से जंग का आरंभ नहीं होगी। लेकिन यह भी है कि चौथे दिन लड़ाई तो होगी लेकिन इन तीन दिनों में हमारी तरफ़ से जंग का आरंभ नहीं होगी। लेकिन यदि आप लोगों ने जंग शुरू कर दी तो फिर हम लड़ने पर मजबूर होंगे। अगले दिन हज़रत साद रज़ियल्लाहु अन्हो ने हुज़ैफ़ा बिन महसनी को भिजवाया। उन्होंने भी हज़रत रबी रज़ियल्लाहु अन्हो वाली तीनों बातें दोहराएँ। तीसरे दिन हज़रत मुगेरा बिन शोबा रज़ियल्लाहु अन्हो गए। जब उन्होंने अपनी गुफ़्तगु के आख़िर में अपने पहले दोनों साथियों की भांति इस्लाम, जिज़्या (कर जो उनकी जीवन और संपत्ति की सुरक्षा के लिए लिया जाए) और क़िताल का वर्णन किया तो रुस्तम ने कहा तब ज़रूर तुम लोग मरोगे। इस पर हज़रत मुगेराा रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा जो हम में से क़तल होगा वह जन्नत में जाएगा और जो तुम में से क़तल होगा वह जहन्नुम में जाएगा और जो हम में से ज़िंदा रहेंगे वह तुम लोगों पर कामयाब रहेंगे। हज़रत मुगेराा रज़ियल्लाहु अन्हो की बात सुनकर रुस्तम ने सख़्त घमंडी हो कर कसम खा कर कहा कि सूरज की क़सम! कल अभी दिन मुकम्मल निकलने भी नहीं पाएगा कि हम इस से क़बल ही तुम सब का वध कर देंगे।

हज़रत मुगेरा रज़ियल्लाहु अन्हो के बाद भी कुछ समझदार मुस्लमानों को हज़रत साद रज़ियल्लाहु अन्हो ने रुस्तम के दरबार में भेजा जिनकी शाम को वापसी हुई। हज़रत साद रज़ियल्लाहु अन्हो ने मुस्लमानों को मोरचा बंद होने का हुक्म दिया और ईरानियों की तरफ़ संदेश भिजवाया कि दरिया पार करना तुम्हारा काम है। पुल पर मुस्लमानों का क़बज़ा था इसलिए ईरानियों को दूसरी जगह सारी रात दरिया अतीक़ पर पुल बनाना पड़ा। रुस्तम ने पुल पार करते वक़्त कहा कि कल हम मुस्लमानों को पीस कर रख देंगे। आगे से एक व्यक्ति ने कहा। उसके साथियों में से किसी ने कहा कि यदि अल्लाह चाहे तो। शायद उस को अल्लाह पर भी यक़ीन था। इस पर रुस्तम ने कहा! यदि अल्लाह न भी चाहे (नऊज़ूबिल्लाह) तब भी हम पीस देंगे। मुस्लमान अपनी सफ़ बंदी मुकम्मल कर चुके थे और हज़रत साद रज़ियल्लाहु अन्हो के जिस्म में फोड़े निकल आए। इस दौरान उनको बीमारी हो गई, फोड़ा निकल आया और वह अर्के निसा अर्थात शियाटीका की बीमारी के कारण बैठ भी नहीं सकते थे। वह सीने के बल लेटे रहते थे। उनके सीने के नीचे तकिया रखा होता था जिसके सहारे वह महल की छत से या दरख़्त के ऊपर जो मचान बनाई थी उस के ऊपर से लश्कर की तरफ़ देखते रहते। हज़रत साद रज़ियल्लाहु अन्हो ने ख़ालिद बिन अरफ़ता को अपना नायब निर्धारित किया। हज़रत साद रज़ियल्लाहु अन्हो ने मुस्लमानों से ख़त्ताब किया और उन्हें जिहाद की तरग़ीब

दी और अल्लाह की फ़तह का वादा याद दिलाया।

फ़ारस वालों की फ़ौजें दरिया अतीक़ के किनारे थीं। ये दरिया अतीक़ भी एक दरिया है जो फुरात से निकलता है और मुस्लमानों की फ़ौजों कुदेस की दीवार और ख़ंदक़ के साथ थीं। कुदेस कादिसया के निकट एक अहाता है जो दरिया अतीक़ से एक मील की दूरी पर था। ईरानी फ़ौज में से तीस हज़ार ज़ंजीरों में जकड़ी हुई थी अर्थात आपस में उन्होंने एक दूसरे के साथ ज़न्जीरें बाँधी हुई थीं ताकि किसी को दौड़ने का अवसर न मिले। हज़रत साद रज़ियल्लाहु अन्हो ने मुस्लमानों को सूर: अनफ़ाल पढ़ने का हुक्म दिया। जब तिलावत की गई तो मुस्लमानों ने संतुष्टि महसूस की। नमाज़ ज़ुहर की अदायगी के बाद मुस्लमानों और फ़ारसन वालों के मध्य लड़ाई का आग़ाज़ हुआ। उन्होंने मुस्लमानों को काफ़ी नुक़्सान पहुंचाया। क़बीला बनू तमीम के माहिर तीर अंदाज़ों को बुला कर हज़रत आसिम रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा कि अपने तीरों के माध्यम से इन हाथियों पर बैठे सवारों पर हमला करो और बहादुर सिपाहियों से कहा कि हाथियों की पीठ पर जा कर उन के हौदज (लकड़ी का बना हौदा जो ऊंट या हाथी की पीठ पर बैठने के लिये रखा जाता है) के बंध काट डालो। इस लिए कोई हाथी ऐसा न बचा जिसके ऊपर से उस का सामान और सवार बाक़ी बचा हो। सूरज डूबने के बाद तक लड़ाई जारी रही। पहले दिन क़बीला बनू असद के पाँच सौ मुस्लमान शहीद हुए। इस दिन को यौम-ए-अर्मास कहा जाता है। दूसरे दिन सुबह हुई तो हज़रत साद रज़ियल्लाहु अन्हो ने सब शुहदा को दफ़नाया और घायलों को औरतों के सपुर्द किया ताकि वह उनकी देख-भाल करें। इसी दौरान मुल्क-ए-शाम से मुस्लमानों को कमक प्राप्त हुआ।

हज़रत हाशिम बिन उत्बा् बिन अबी वकास रज़ियल्लाहु अन्हु इस कमक के अमीर थे। इसके अगले हिस्सा पर हज़रत काअका बिन अम्र रज़ियल्लाहु अन्हो अमीर थे। कइ बहुत जल्द सफ़र तै कर के अग़वास की सुबह इराक़ के लश्कर में पहुंच गए। काअका रज़ियल्लाहु अन्हो ने यह होशयारी की कि अपने हर प्रथम दस्तों को दस दस सिपाहियों को ग्रुपों में तक़सीम कर दिया था जो एक दूसरे से कुछ दूरी पर हरकत कर रहे थे और बारी बारी इस्लामी लश्कर से यह दस दस के दस्ते मिलते जाते थे। हर दस्ता के आने पर नाराय तकबीर बुलंद होता और यूं मालूम होता कि इस्लामी लश्कर को निरंतर सहायता मिल रही है। ख़ुद हज़रत काअका पहले हिस्सा में पहुंचे। जाते ही मुस्लमानों को सलाम किया और लश्कर की आमद की ख़ुशख़बरी सुनाई और कहा हे लोगो तुम वह करो जो मैं कर रहा हूँ। यह कह कर वह आगे बढ़े और मुबारज़त (युद्ध क्षेत्र में दोनों ओर से एक-एक योद्धा का निकलकर लड़ना) चाहा। यह सुनकर बहमन ज़ाविया मुक़ाबले के लिए निकला। दोनों में मुक़ाबला हुआ और हज़रत काअका रज़ियल्लाहु अन्हो ने उसे क़तल कर दिया। मुस्लमान बहमन ज़ाविया के क़तल और मुस्लमानों के इमदादी लश्कर की वजह से बहुत ख़ुश थे। हज़रत काअका रज़ियल्लाहु अन्हो के बारे में हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो का एक कथन है कि वह लश्कर नाक़ाबिल शिकस्त होता है जहां उन जैसे व्यक्ति मौजूद हो।

इस दिन ईरानी अपने हाथियों के माध्यम जंग नहीं कर सके क्योंकि उनके हौदज (लकड़ी का बना हौदा जो ऊंट या हाथी की पीठ पर बैठने के लिये रखा जाता है) पिछले दिन टूट गए थे। इसलिए वे सुबह से उनकी दरूस्तगी में व्यस्त थे और मुस्लमानों ने यह तरकीब इख़तियार की कि अपने ऊंटों को झोल पहना दिए जिसके बाइस ऊंट छुप गए। उनके ऊपर कपड़े डाल दिए उनके जिस्म और गर्दनें सब छुप गईं और यूं मालूम होता था मानो हाथी हैं। ये ऊंट जहां जाते ईरानियों के घोड़े इस तरह बिदकने शुरू कर देते जैसे पिछले दिन मुस्लमानों के घोड़े बिदकते रहे थे। सुबह से लेकर दोपहर तक फ़रीक़ैन के घुड़सवार मुक़ाबला करते रहे। जब दिन आधे से ज़्यादा गुज़र गया तो उमूमी जंग शुरू हुई जो आधी रात तक जारी रही। यह दूसरा दिन यौमुल अग्वस कहलाता है और यह दिन मुस्लमानों के नाम रहा अर्थात इस में मुस्लमानों को सफ़लता मिली। तीसरे दिन की सुबह हुई तो दोनों लश्कर अपने अपने मोर्चों में थे। इस दिन ख़ूनी भयावह जंग हुई। मुस्लमान शहीदों की संख्यां दो हज़ार थी और ईरानी फ़ौज के दस हज़ार सिपाही क़तल हुए। मुस्लमान अपने मक़्तूलीन को दफ़न करते रहे और घायलों को ईलाज के लिए औरतों के सपुर्द करते रहे जबकि ईरानियों के मक़्तूलीन की लाशें इसी तरह मैदान में पड़ी रहीं। इस रात ईरानी अपने हाथियों के हौदज इत्यादि दरुस्त करते रहे। पैदल फ़ौज हाथियों की हिफ़ाज़त के लिए साथ थी जबकि आज के दिन वे हाथी इतनी तबाही नहीं फैला सके जितनी उन्होंने पहले दिन फैलाई थी। हज़रत साद रज़ियल्लाहु अन्हो ने हज़रत काअका रज़ियल्लाहु अन्हो और हज़रत आसिम रज़ियल्लाहु अन्हो की तरफ़ संदेश भेजा कि ईरानियों के सफ़ैद हाथी से मेरा पीछा छुड़ाओ। इस लिए हज़रत काअका रज़ियल्लाहु अन्हो और हज़रत आसिम रज़ियल्लाहु अन्हो ने हमला कर के उस की दोनों आँखों में नेज़े घोंपे जिससे हाथी ने बदहवास हो कर अपने सवार को नीचे गिरा दिया। उस की सूंड काट दी गई और फिर तीरों के हमले कर के उसे नीचे गिरने पर मजबूर कर दिया। इस के बाद दूसरे मुस्लमानों ने एक और हाथी की आँखों में नेज़े मारे। कभी वह भाग कर मुस्लमानों के लश्कर में आता तो वे उस को नेज़े की नोक चुभोते और कभी ईरानियों के लश्कर में जाता तो वह इस को नेज़े चुभोते। अंतत: वह हाथी जिसे अजरब कहते थे दरिया अतीक़ की तरफ़ भागा और उस की देखा देखी अन्य हाथी भी उस के पीछे दरिया में कूद गए और वे अपने सवारों समेत हलाक हो गए। दिन ढलने तक यह लड़ाई जारी रही। उसे अमास का दिन कहते हैं।

इशा की नमाज़ के बाद दुबारा घमसान युद्ध शुरू हुआ। कहा जाता है कि उस वक़्त तलवारों की आवाज़ें यूं सुनाई दे रही थीं जैसे लोहारों की दुकानों में लोहा काटा जा रहा हो। सारी रात हज़रत साद रज़ियल्लाहु अन्हो भी जागते रहे और अल्लाह के हुज़ूर दुआ में व्यस्त रहे। अरब-ओ-अजम ने इस रात जैसा वाक़िया कभी मुशाहिदा नहीं किया था। सुबह हुई तो मुस्लमानों का जोश-ओ-जज़बा बरक़रार था और वे विजय रहे। इस रात के बाद आने वाली सुबह समस्त लोगों पर थकन की कैफ़ीयत थी क्योंकि पूरी रात वे जागते रहे थे। इस रात को लेलतुल हरीर हैं। इस के नामकरण का यह कारण लिखा है कि रात मुस्लमानों ने आपस में गुफ़्तगु नहीं की बल्कि सिर्फ़ सरगोशियाँ ही करते रहे। हरीर का अर्थ भी यही लिखा है कि जब तीर चलाया जाता है तो जिस तरह हल्की सी आवाज़ कमान में से निकलती है या चक्की चलने की हल्की सी आवाज़ आ रही हो। तिब्री में भी लेलतुल हरीर नाम रखने का कारण यही लिखा है कि मुस्लमान उस रात रात का आरंभ से लेकर सुबह तक निहायत बहादुरी के साथ जंग करते रहे। वे ज़ोर से नहीं बोल रहे थे बल्कि वे आहिस्ता-आहिस्ता से गुफ़्तगु करते थे। इस वजह से इस रात का नाम लेलतुल हरीर पसिद्ध हो गया। बहरहाल चौथी सुबह फिर दोपहर तक लड़ाई जारी रही और ईरानी पराजय स्वीकार करते रहे। इस के बाद रुस्तम पर हमला किया गया तो वे दरिया अतीक़ की तरफ़ भाग निकला। जब उसने दरिया में छलांग लगाई तो हलाल नाम के मुस्लमान ने उसे पकड़ लिया और घसीट कर ख़ुशकी पर ले आया और उसे क़तल कर डाला। इस के बाद वे मुस्लमान जिसने रुस्तम को क़त्ल किया था ऐलान करने लगा कि मैंने रुस्तम को क़तल कर दिया है। मेरी तरफ़ आओ। मुस्लमानों ने हर तरफ़ से उस को घेर लिया और ज़ोर से नारा तकबीर लगाया। रुस्तम के क़तल की ख़बर से फ़ारस वालों पराजय से भाग गए। मुस्लमानों ने उनका पीछा कर के उन्हें क़तल भी किया और एक बड़ी संख्यां को क़ैदी भी बनाया। इस दिन को यौमुल कादिसया कहा जाता है। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो प्रतिदिन सुबह होते ही मैदान से बाहर आने वाले सवारों से जंग कादिसयाके बारे में पूछा करते थे। जब जंग की बशारत लाने वाले संदेशक ने बताया कि अल्लाह ने मुशरिकों को शिकस्त दी है तो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो उस वक़्त दौड़ते जा रहे थे और मालूमात लेते जा रहे थे जबकि वह क़ासिद अपनी ऊंटनी पर सवार था और वह हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो को पहचानता भी नहीं था। जब वह क़ासिद मदीना में दाख़िल हुआ और लोग हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो को अमीरुल मोमेनीन कह रहे थे और सलाम कर रहे थे तो क़ासिद ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो से अर्ज़ किया कि आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने मुझे क्यों नहीं बताया कि आप अमीरुल मोमेनीन हैं। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने फ़रमाया हे भाई! कोई बात नहीं।

बहरहाल फ़तह की सूचना के बाद हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने मजमा में फ़तह की ख़बर पढ़ कर सुनाई और इस के बाद एक प्रभावी तक़रीर की। आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने हुक्म भेजा कि लश्कर अपनी जगह पर ठहरा रहे और फ़ौज की दुबारा तंज़ीम-ओ-तर्तीब की जाए और दूसरे इस्लाह के योग्य विषयों की तरफ़ तवज्जा दी जाए। हज़रत साद रज़ियल्लाहु अन्हो ने दरबार-ए-ख़िलाफ़त से राहनुमाई ली थी कि क़ादसिया की जंग में बहुत से लोग ईरानियों की तरफ़ से ऐसे भी थे जो इस से क़बल मुस्लमानों से सुलह कर चुके थे और उनमें कुछ तो इस कार्य के ऐसे मुद्दई थे कि ईरानी हुकूमत ने उनके मर्ज़ी के खिलाफ, जबरन उन्हें अपने साथ शामिल कर लिया था। अपनी मर्ज़ी से नहीं आए थे बल्कि मजबूर हो कर आए थे और बहुत से लोगों का यह दावा सही भी था। बहुत से लोग जंग के कारण इस इलाक़े को छोड़कर दुश्मन के इलाक़े की तरफ़ चले गए थे और वापस आ रहे थे। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने इन उमूर के फ़ैसले के लिए मदीना में मजलिस-ए-शूरा आयोजित की और इसके निर्णय के बाद यह हिदायत भेजी कि जिन लोगों

से मुस्लमानों के वादे थे और उन्होंने अपने वादे पूरे किए और अपने इलाक़े में मुक़ीम रहे, दुश्मन की तरफ़ नहीं गए उनके वादे का पूरी वफ़ा-दारी से एहतिराम किया जाएगा। जिन लोगों से मुस्लमानों के वादे नहीं थे परन्तु वे अपने इलाक़े में रहे और दुश्मन की तरफ़ जा कर तुम्हारे ख़िलाफ़ लड़ाई के लिए तैयार नहीं हुए तो उनसे भी वही सुलूक किया जाए जो उन लोगों से किया जा रहा है जिनसे वादे हैं। जो लोग यह दावा करते हैं कि ईरानी हुकूमत ने ज़बरदस्ती उनको लश्कर में शामिल कर लिया था और उनका दावा सच्चा नज़र आता है तो उनसे भी मुस्लमानों के सुलूक में कोई कमी नहीं की जाए। उनको भी कुछ नहीं कहा जाए और जो लोग इस कार्य के झूठे मुद्दई हैं कि उन पर जबर किया गया बल्कि वे ख़ुद अपनी मर्ज़ी से दुश्मन के साथ मिलकर तुम्हारे ख़िलाफ़ कार्यरत रहे तो उनका पहला वादा तो ख़तम हो गया क्योंकि उन्होंने दुश्मन का साथ दिया है। अब या तो उनसे दुबारा समझोता की जाए या उन्हें उनकी अमन की जगह पर पहुंचा दिया जाए अर्थात फिर उनको मुआहिदा कर के वहां से निकाल दिया जाए और जहां वे जाना चाहते हैं अमन से रहने के लिए चले जाएं और जिन लोगों से समझोता नहीं और वे इस इलाक़े को छोड़कर दुश्मन की तरफ़ चले गए और तुम्हारे ख़िलाफ़ जंग के लिए तैयार हुए उनके सम्बन्ध में यदि तुम मुनासिब समझो तो उन्हें भी बुला लो और वे जिज़्या (कर जो उनकी जीवन और संपत्ति की सुरक्षा के लिए लिया जाए) अदा कर दें और तुम्हारे इलाक़े में रहें। नरमी का सुलूक जितना हो सकता है करना है और तुम मुनासिब समझो तो उन्हें नहीं बुलाओ और वे बदस्तूर तुम्हारे ख़िलाफ़ जंग आदि के लिए तैयार रहें और तुम उनके ख़िलाफ़ लड़ाई जारी रखो। यदि वे फिर लड़ाई करते रहते हैं तो फिर ठीक है, फिर तुम्हें भी लड़ाई का हक़ है लेकिन यदि वे बावजूद दुश्मन के साथ मिलने के कुछ आ जाते हैं तो फिर उनको छोड़ दो।

ये अहकाम मुफ़ीद साबित हुए और नवाह के लोग वापस आकर अपनी ज़मीनों पर आबाद हो गए और यह वुसअत हौसला की एक उम्दा मिसाल है। कितनी बड़ी बहादुरी है कि मुस्लमानों ने उन लोगों को भी अपनी ज़मीन आबाद करने के लिए बुला लिया जो एक निहायत नाज़ुक वक़्त में अपने मुआहिदात को पृथक् रखते हुए दुश्मन से जा मिले थे। जबकि मदीना की मजलिस-ए-मुशावेरत ने उन्हें इस कार्य की इजाज़त दे दी थी कि चाहे ऐसे ईरानियों को वापस बुला लें चाहे न बुलाऐं और उनकी भूसम्पत्ति आपस में तक़सीम करलीं। मुस्लमानों में भूसम्पत्ति तक़सीम कर दें। इतिहासकारों ने वर्णन किया है कि इस ख़तरे के वक़्त में वादा तौड़ने वालों को वापस बुलाया गया तो उनकी भूसम्पत्ति पर आम भूसम्पत्ति की निसबत ज़्यादा टैक्स लगाया गया था। केवल यह एक शर्त थी कि ठीक है तुमने वादा तौड़ा है। वापस आ जाओ अपनी ज़मीनें आबाद करो लेकिन जो टैक्स ज़मीन का है वे तुम्हें दूसरों की निसबत ज़्यादा देना पड़ेगा लेकिन बहरहाल ज़मीनों के मालिक बेशक बने रहो। इराक़ की फ़ुतूहात के सिलसिला में इस जंग को निर्णायक हैसियत हासिल है। मुस्लमान मुजाहिदीन ने शदीद मुख़ालिफ़ हालात का निहायत साबित क़दमी से मर्दानावार मुक़ाबला किया और इतिहासकारों ने वर्णन किया है कि दरबार-ए-ख़िलाफ़त से जब लोगों के लिए गुज़ारे निर्धारित हुए तो इस विषय में क़ादसिया में शिरकत भी एक वजह इमतियाज़ समझी गई। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने क़ादसिया में शरीक लोगों के ज़्यादा वज़ीफ़े निर्धारित किए।

(मक़ाला "तारीख़-ए-इस्लाम बाद हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु'' आदरणीय सय्यद मीर महमूद अहमद नासिर पृष्ठ 91 से 95) (उद्धरित अल्कामिल फ़िल तारीख़, भाग 2 पृष्ठ 301 से 333 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2006 ई.) (उद्धरित फ़ारूक अज़ शिबली नुमानी, पृष्ठ 84 से 89 विभाग इस्लामियात 2004 ई.)(तारीख़ तिब्री, भाग 2 पृष्ठ 435-436 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2012 ई.)(उद्धरित तारीख़ तिब्री अनुवादक, भाग 2 हिस्सा दोम, पृष्ठ 263- 310- 325 नफ़ीस एकेडेमी कराची 2004 ई.) (मोअज्जमुल बुल्दान, भाग 4 पृष्ठ 94, 356) (मोअज्जमुल बुल्दान, भाग प्रथम, पृष्ठ 267)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो ने क़ादसिया की जंग का वर्णन करते हुए जो फ़रमाया है इस में से कुछ हिस्सा बयान करता हूँ। "हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो के ज़माना में जब ख़ुसरो परवेज़ के पोते यज़दजर्रद की तख़तनशीनी के बाद इराक़ में मुस्लमानों के ख़िलाफ़ वसीअ पैमाना पर जंगी तैयारियां शुरू हो गईं तो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने उनके मुक़ाबला के लिए हज़रत साद बिन अबी वक्कास रज़ियल्लाहु अन्हु की सरकर्दगी में एक लश्कर रवाना किया। हज़रत साद रज़ियल्लाहु अन्हो ने जंग के लिए क़ादसिया का मैदान निर्धारित किया और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो को इस स्थान का नक़्शा भिजवा दिया। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने इस स्थान को बहुत पसंद किया परन्तु साथ ही लिखा कि पूर्व इस के कि ईरान के बादशा के साथ जंग की जाए तुम्हारा फ़र्ज़ है कि एक नुमाइंदा वफ़द ईरान के बादशा के पास भेजो और उसे इस्लाम स्वीकार करने की दावत दो। इस लिए उन्होंने इस हुक्म के मिलने पर एक वफ़द यज़दजर्रद की मुलाक़ात के लिए भिजवा दिया। जब यह वफ़द ईरान के बादशा के दरबार में पहुंचा तो ईरान के बादशा ने अपने अनुवादक से कहा कि इन लोगों से पूछो कि ये क्यों आए हैं और उन्होंने हमारे मुल्क में क्यों फ़साद बर-पा कर रखा है। जब उसने यह प्रश्न किया तो वफ़द के रईस हज़रत नुमान बिन मुक़र्रिन रज़ियल्लाहु अन्हो खड़े हुए और उन्होंने रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के आने का वर्णन करते हुए बताया कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लमने हमें हुक्म दिया है कि हम इस्लाम को फैलाएं और संसार के समस्त लोगों को दीन हक़ में शामिल होने की दावत दें। इस हुक्म के अनुसार हम आपकी ख़िदमत में भी हाज़िर हुए हैं और आपको इस्लाम में शामिल होने की दावत देते हैं। यज़दजर्रद इस जवाब से बहुत गुस्सा हुआ और कहने लगा कि तुम एक जानवर और मुर्दार खाने वाली क़ौम हो। तुम्हें यदि भूख और मजबूरी ने इस हमला के लिए मजबूर किया है तो मैं तुम सबको इस क़दर खाने पीने का सामान देने के लिए तैयार हूँ कि तुम संतोष के साथ अपनी ज़िंदगी गुज़ार सको। इसी तरह तुम्हें पहनने के लिए लिबास भी दूंगा। तुम ये चीज़ें लो और अपने देश को वापस चले जाओ। तुम हमसे जंग करके अपनी जानों को क्यों ज़ाए करना चाहते हो। जब वह बात ख़त्म कर चुका तो इस्लामी वफ़द की तरफ़ से हज़रत मुग़ीरा बिन ज़ुराह रज़ियल्लाहु अन्हो खड़े हुए और उन्होंने कहा। आपने हमारे सम्बन्ध में जो कुछ बयान किया है यह बिल्कुल दरुस्त है। हम वाक़िया में एक जानवर और मुर्दार खाने वाली क़ौम थे। साँप और बिच्छू और टिड्डियां और छिपकलियां तक खा जाते थे लेकिन अल्लाह तआला ने हम पर फ़ज़ल किया और उसने अपना रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हमारी हिदायत के लिए भेजा। हम इस पर ईमान लाए और हमने उस की बातों पर अमल किया जिसका परिणाम यह हुआ कि अब हम में एक इन्क़िलाब पैदा हो चुका है। और अब हम में वे ख़राबियां मौजूद नहीं जिनका आपने वर्णन किया है। अब हम किसी लालच में आने के लिए तैयार नहीं। हमारी आपसे जंग शुरू हो चुकी है। अब इस का निर्णय मैदान-ए-जंग में ही होगा।'' यदि आपको यही मंज़ूर है कि दावत नहीं मानते और हमारे साथ जंग करना चाहते हैं तो फिर ठीक है हम भी जंग करेंगे।'' दुनयवी माल-ओ-मता का लालच हमें अपने इरादा से रोक नहीं रख सकता। यज़दजर्रद ने यह बात सुनी तो उसे सख़्त ग़ुस्सा आया और उसने एक नौकर से कहा कि जाओ और मिट्टी का एक बोरा ले आओ। मिट्टी का बोरा आया तो उसने इस्लामी वफ़द के सरदार को आगे बुलाया और कहा कि चूँकि तुमने मेरी पेशकश को ठुकरा दिया है। इस लिए अब इस मिट्टी के बोरे के सिवा तुम्हें और कुछ नहीं मिल सकता। वह सहाबी रज़ियल्लाहु अन्हो निहायत संजीदगी के साथ आगे बढ़े। उन्होंने अपना सिर दिया।'' जैसा कि पहले भी वर्णन हो चुका है लेकिन यह थोड़ी सी तफ़सील है अपना सिर झुका दिया" और मिट्टी का बोरा अपनी पीठ पर उठा लिया फिर उन्होंने एक छलांग लगाई और तेज़ी के साथ उस के दरबार से निकल खड़े हुए और अपने साथियों को बुलंद आवाज़ से कहा आज ईरान के बादशाह ने अपने हाथ से अपने देश की ज़मीन हमारे हवाले कर दी है और फिर घोड़ों पर सवार हो कर तेज़ी से निकल गए। बादशाह ने जब उन का यह नारा सुना तो वह काँप उठा और उसने अपने दरबारियों से कहा दौड़ो और मिट्टी का बोरा उनसे वापस ले आओ। यह तो बड़ी बदशगुनी हुई है कि मैंने अपने हाथ से अपने देश की मिट्टी उनके हवाले कर दी है परन्तु वे उस वक़्त तक घोड़ों पर सवार हो कर बहुत दूर निकल चुके थे। लेकिन आख़िर वही हुआ जो उन्होंने कहा था और कुछ वर्षों के अंदर अंदर सारा ईरान मुस्लमानों के अधीनी गया।'' हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो लिखते हैं कि "यह महान बदलाव मुस्लमानों में क्यों पैदा हुआ? इसी लिए कि क़ुरआन की तालीम ने उनके अख़लाक़ और उनकी आदात में एक इन्क़िलाब पैदा कर दिया था। उनकी तुच्छ ज़िंदगी पर उसने एक मौत तारी कर दी थी और उन्हें बुलंद किरदार और आला दर्जा के अख़लाक़ की सतह पर ला कर खड़ा कर दिया था ।'' (तफ़सीर कबीर, भाग 6 पृष्ठ 204-205) जिसकी वजह से यह इन्क़िलाब पैदा हुआ। अत: क़ुरआन की तालीम पर अमल करने से ही हक़ीक़ी इन्क़िलाब आया करते हैं। इन शा अल्लाह तआला भविष्य में भी यह वर्णन चलेगा।

☆ ☆ ☆ ☆

Virtual क्लास

आस्ट्रेलिया से सम्बन्ध रखने वाले मयार-ए-कबीर के अत्फ़ाल और नैशनल आमिला मज्लिस अत्फ़ालुल अहमदिया की हज़रत अमीरुल मौमिनीन ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ से वर्चूअल मुलाक़ात

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम सब के लिए पूर्ण उदाहरण हैं हमें हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की हर सुन्नत की पैरवी करनी चाहिए ताकि हम एक अच्छे मुस्लमान बन सकें

ऐसे लोगों को मित्र बनाएँ जो अच्छी विशेषताओं के मालिक हों, यदि आप विद्यार्थी हैं तो यह बात भी समक्ष रखें कि आपके मित्र पढ़ाई में भी अच्छे हों

ख़ुदा तआला के फ़ज़ल-ओ-करम से सिडनी, कैनबरा और एडीलेड से सम्बन्ध रखने वाले मयार-ए-कबीर के अत्फ़ाल, नैशनल आमिला मज्लिस अत्फ़ालुल अहमदिया आस्ट्रेलिया के साथ हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ से10 अक्तूबर 2020 को पहली ऑनलाइन मुलाक़ात की सआदत हासिल की।

मुलाक़ात के लिए अत्फ़ाल मस्जिद बैतुल अहद sydney के ख़िलाफ़त हाल में जमा हुए। इस मुलाक़ात में आदरणीय सदर मज्लिस खुद्दामुल अहमदिया, 9 मैंबरान नैशनल आमिला मज्लिस अत्फ़ालुल अहमदिया, 8 नाज़िमीन अत्फ़ाल और मयार-ए-कबीर के 62 अत्फ़ाल मौजूद थे। इन अत्फ़ाल में से 56 का सम्बन्ध sydney की मजालिस से था। 4 अत्फ़ाल canberra से आए थे जबकि 2 अत्फ़ाल adelaide से जहाज़ के द्वारा अपने प्यारे आक़ा से मुलाक़ात के लिए पहुंचे थे। जैसे जैसे मुलाक़ात का समय क़रीब आता जा रहा था अत्फ़ाल की बेचैनी बढ़ती जा रही थी। प्यारे आक़ा का नूरानी चेहरा सामने आते ही अत्फ़ाल के चेहरे ख़ुशी से दमक उठे और सब ने खड़े हो कर सय्यदना हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ का इस्तिक़बाल किया। हुज़ूर अक़्दस ने अस्सलामो अलैकुम की ख़ूबसूरत इस्लामी दुआ दी और सबको बैठने का इरशाद फ़रमाया। तिलावत और नज़्म के बाद विनीत ने मज्लिस अत्फ़ालुल अहमदिया आस्ट्रेलिया के विभिन्न विभागों की कार-गुज़ारी रिपोर्ट हुज़ूर अनवर की ख़िदमत में पेश की। इस के बाद अत्फ़ाल ने अपने आक़ा की ख़िदमत में प्रश्न पेश किए और प्यारे आक़ा ने निहायत शफ़क़त से उन प्रश्न के उत्तर अता फ़रमाए।

★ एक तिफ़्ल ने प्रश्न किया कि बच्चों के लिए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की कुतुब को समझना मुश्किल हो सकता है इस लिए किस आयु में ये कुतुब पढ़नी शुरू करनी चाहिऐं। इस के उत्तर में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल ने फ़रमाया कि कुछ ऐसी पुस्तकें हैं जो समझने में अपेक्षाकृत आसान हैं उस के अतिरिक्त कुछ पुस्तकें जिनका अंग्रेज़ी अनुवाद मौजूद है जिसमें कशती नूह, मलफ़ूज़ात की पहले दो भाग, विभिन्न इक़तिबासात और रुहानी ख़ज़ायन के कुछ हिस्सों का अध्यन कर सकते हैं।

★ एक तिफ़्ल ने प्रश्न किया कि अल्लाह तआला अपने बंदों में से नबियों का चुनाव कैसे करता है? जिस के उत्तर में हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया के केवल अल्लाह तआला ही ये बात सबसे बेहतर जानता हैऔर कुछ लोग नेक फ़ित्रत पैदा होते हैं फिर अल्लाह तआला बचपन से ही उनकी तर्बीयत इस रंग में करता है कि वे कभी भी कुछ ग़लत नहीं करते। इस विषय में हुज़ूर अनवर ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के बचपन की घटना का वर्णन किया जिसमें एक फ़रिश्ते ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का सीना खोल कर के पवित्र हृदय को साफ़ कर के वापस रख दिया और यह कशफ़ी नज़ारा आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के साथ खेलने वाले बच्चों ने भी देखा।

★ एक बच्चे ने प्रश्न किया कि कोई नेक काम करने से पहले जब शैतान हमें बहकाता है तो हमें क्या करना चाहिए? हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल ने फ़रमाया कि ताव्वुज़ और इस्तग़फ़ार पढ़ें, साबित-क़दम रहें और अल्लाह तआला से सहायता मांगें।

★ एक और तिफ़्ल ने प्रश्न किया कि जब कोई अल्लाह तआला पर ईमान ले आता है तो इस्लाम को सच्चे मज़हब के तौर पर मानना क्यों ज़रूरी होता है जबकि अन्य मज़ाहिब भी अल्लाह तआला को मानते हैं? इस के उत्तर में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल ने फ़रमाया कि अन्य अंबियाय और इल्हामी पुस्तकें गिनी चुनी कौमों के लिए थीं और समस्त अंबियाय ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की नबुव्वत की पेशगोई की थी। इस्लाम वह वाहिद मज़हब है जिसकी शिक्षाओं सांसार के समस्त लोगों के लिए हैं और क़ुरआन-ए-करीम वह अकेली पुस्तक है जिसकी हिफ़ाज़त का ज़िम्मा ख़ुद अल्लाह तआला ने लिया है।

★ एक तिफ़्ल ने प्यारे आक़ा से पूछा कि हुज़ूर अनवर को आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की विशेषताओं में से सबसे पसंदीदा ख़ूबी कौन सी लगती है? हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल ने निहायत दिलचस्प और ख़ूबसूरत उत्तर अता फ़रमाया कि जब आप किसी से मुहब्बत करते हैं तो आप उस व्यक्ति से पूर्ण तौर पर मुहब्बत करते हैं और आपको उस व्यक्ति की हर ख़ूबी एक से बढ़कर एक लगती है। हुज़ूर अनवर ने मज़ीद फ़रमाया कि अल्लाह तआला फ़रमाता है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम सब के लिए पूर्ण उदाहरण हैं हमें हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की हर सुन्नत की पैरवी करनी चाहिए ताकि हम एक अच्छे मुस्लमान बन सकें।

★ कोविड क्राइसिस (covid crisis) के सम्बन्ध में एक तिफ़्ल ने पूछा कि क्या घर में अदा की गई बाजमाअत नमाज़ भी मस्जिद में अदा की गई बाजमाअत नमाज़ जितना सवाब रखती है। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल ने फ़रमाया कि चूँकि आप घर में बाजमाअत नमाज़ मजबूरी के अधीन अदा कर रहे हैं इस लिए अल्लाह तआला आपकी नीयत के अनुसार सवाब देगा।

★ एक तिफ़्ल ने अपने बड़े हो कर फूटबाल का खिलाड़ी बनने की ख़ाहिश का इज़हार करते हुए हुज़ूर-ए-अनवर से इस बारे में मार्गदर्शन चाहा जिसके उत्तर में हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया कि यदि आप एक अच्छे अहमदी हैं, पांचों समय की नमाज़ नियमित पढ़ा करते हैं और समस्त इस्लामी शिक्षाओं पर अमल करने की कोशिश करते हैं तो आप डाक्टर, विज्ञानिक, खिलाड़ी और जो मर्ज़ी चाहें बन सकते हैं।

★ एक तिफ़्ल ने सोहबत के असर के सम्बन्ध में पूछा कि हमें मित्र बनाते हुए किन विशेषताओं को दृष्टिगत रखना चाहिए। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल ने फ़रमाया कि ऐसे लोगों को मित्र बनाएँ जो मुख़लिस, वफ़ादार, हमदर्द और अच्छी विशेषताओं के मालिक हों और नास्तिकता की विचारधारा न रखते हों। तथा फ़रमाया कि यदि आप विद्यार्थी हैं तो ये बात भी दृष्टिगत रखें कि आपके मित्र पढ़ाई में भी अच्छे हों।

प्यारे आक़ा से मुलाक़ात के बाद अत्फ़ाल, आमिला के मैंबरान और नाज़िमीन में एक ग़ैरमामूली जोश और वलवला नज़र आया। सबने एक दूसरे को मुबारकबाद पेश की और अल्लाह तआला का शुक्र अदा किया।

(रिज़वान अहमद, मुहतमिम अत्फ़ाल, मज्लिस खुद्दामुल अहमदिया आस्ट्रेलिया)

(धन्यवाद अख़बार अल्फ़ज़ल इंटरनैशनल 23 अक्तूबर2020)

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह ख़ामिस

ख़िलाफत का निज़ाम भी अल्लाह तआला और उसके रसूल के आदेशों और निज़ाम का हिस्सा है।

(ख़ुत्बा जुम्अ: 24 मई 2019 ई)

तालिबे दुआ

मुहम्मद शुएब सुलेजा पुत्र जनाब मुहम्मद ज़ाहिद सुलेजा मरहूम तथा फैमली, अहमदिया जमाअत कानपुर(उत्तर प्रदेश)

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :

1800 103 2131

(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)

Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ की यूरोप की यात्रा, मई जून 2015 ई (भाग-26)

कोसोवो तथा मांटेनेगरू से आने दलों की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह के साथ मुलाक़ात,निकाह की घोषणाएँ

(रिपोर्ट: अब्दुल माजिद ताहिर, एडिशनल वकीलुत्तबशीर लंदन)
(अनुवादक: सय्यद मुहयुद्दीन फ़रीद)

कोसोवो देश के दल की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ से मुलाक़ात

इसके बाद मुल्क कोसोवो (Kosovo) से आने वाले दल ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ के साथ मुलाक़ात का सौभाग्य प्राप्त किया। कोसोवो से आने वाला दल 17 लोगों पर आधारित था जिन में दो महिलाओं और दो बच्चे भी शामिल थे। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने दल के सदस्यों से दरयाफ़त फ़रमाया कि कौन से लोग पहली मर्तबा जलसे में शामिल हुए हैं ओर उनके जलसे के बारे में क्या विचारों हैं।

दल के एक मेंबर AGRON BINAKAJ साहिब ने अपने विचारों का प्रकटन करते हुए बताया कि :

पिछले वर्ष के मुक़ाबिल पर जलसे के इंतिज़ामात में ग़ैरमामूली वुसअत और नुमायां तबदीलीयां महसूस की हैं। जलसे के समस्त इंतिज़ामात बहुत उच्च थे।

SHAIP ZEQIRA साहिब ने अपने विचारों का प्रकटन करते हुए कहा

मैं इस जलसे में शामिल हो कर अत्यधिक ख़ुश हूँ। यह मेरे जीवन के बेहतरीन और प्रसन्न रहने वाले दिन थे। जलसे के समस्त इंतिज़ामात और यहां उपस्थित प्रत्येक व्यक्ति ने मुझे प्रभावित किया है। सारे इंतिज़ामात बहुत मुनज़्ज़म थे।

उन्होंने कहा कि मुझे एक रुहानी ख़ुशी भी प्राप्त हुई है।

SHKELQIM BYTYCI साहिब जो बतौर लोकल मुअल्लिम सेवा कर रहे हैं पहली मर्तबा जलसा में शामिल हुए थे। उन्होंने अपनी भावनाओं का प्रकटन करते हुए कहा:

कोसोवो में हमारी जमाअत की संख्या बहुत कम है। मैं पहली मर्तबा यहां आकर इतनी बड़ी जमाअत को देखकर बहुत ख़ुश हूँ। इस महान जलसा में शामिल हो कर मुझे वास्तव में इस बात का एहसास हुआ है कि में इस्लाम अहमदियत की अज़ीम फ़ैमिली का एक हिस्सा हूँ।

उन्हों ने कहा कि हुज़ूर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ के समस्त भाषण अत्यधिक ज्ञान से परिपूर्ण थे। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ के भाषण का मुझ पर बहुत गहरा प्रभाव हुआ है। मैं समस्त आलाइंतिज़ामात के लिए भी मुबारकबाद प्रस्तुत करता हूँ।

दल में शामिल एक महिला RINA ZEQIRAJ साहिबा ने बताया कि :

मैं पहली मर्तबा जलसे में शामिल हुई हूँ। जलसे के समस्त इंतिज़ामात प्रत्येक दृष्टि से मुकम्मल थे। यदि किसी को जमाअत अहमदिया की सदाक़त का सबूत चाहिए तो वह यहां जलसे पर आए और स्वयं अपनी आँखों से देख लें।

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि आपने बड़ा अच्छा नुक्ता वर्णन किया है

उन्हों ने हुज़ूर अनवर की सेवा में कोसोवो की जमाअत के लिए ख़ुसूसी दुआ की दरख़ास्त की। इस पर हुज़ूर ने फ़रमाया कि इन शा अल्लाह। मैं तो प्रत्येक छोटी जमाअत के लिए दुआ करता हूँ। अल्लाह करे कि वहां भी इतनी वुसअत पैदा हो जाएगी कि वहां भी बड़े बड़े जलसे आयोजित होने लगें।

एक मित्र ALBAN ZEQIRAJ साहिब ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ की सेवा में कोसोवो के समस्त लोगों की ओर से अस्सलामो अलैकुम अर्ज़ किया । इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने अज़राह्-ए-शफ़क़त कोसोवो के समस्त लोगों के नाम वाअलैकुम सलाम का संदेश भिजवाया।

उन्हों ने कहा कि पिछले चार वर्ष से कोसोवो में कोई केंद्री मुबल्लिग़ नहीं है। हुज़ूर अनवर से दुआ की दरख़ास्त है कि वहां जल्द एक मुबल्लिग़ के आने के सामान पैदा हो जाएं।

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि अपने देश के लीडरों और मौलवियों के लिए दुआ करें कि अल्लाह तआला उन्हें अक़्ल प्रदान फ़रमाए और उनकी ओर से पैदा की गई रोकें दूर हो जाएं।

इस के बाद कोसोवो जमाअत के सेक्रेटरी इशात मुहम्मद पीसी (Md. Peci) साहिब ने कहा कि हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने मुझे और एक और मित्र Rexhep Hasani साहिब को क़ुरआन-ए-करीम के अल्बानियन अनुवाद की प्रफ़ू रीडिंग की ज़िम्मेदारी दी है और ये ग़ैरमामूली तौर पर मुश्किल और अत्यधिक महत्वपूर्ण ज़िम्मेदारी है। उन्हों ने हुज़ूर अनवर की सेवा में इस महत्वपूर्ण ज़िम्मेदारी की उत्तम अदायगी के लिए दुआ की दरख़ास्त की।

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला सहायता फ़रमाए। बहुत एहतियात से करें। बहुत ध्यान से करने वाला कार्य है। जब भी अनुवाद का काम शुरू करें तो दुआ के साथ शुरू करें और दुआ पर ही ख़त्म करें। अल्लाह तआला आपको तौफ़ीक़ दे आमीन।"

एक मित्र Bleart Zeqiraj साहिब ने कहा कि कोसोवो जमाअत के कुछ लोगों की इच्छा है कि वह ख़ाना काबा का दर्शन करें। उन्हों ने हुज़ूर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ की सेवा में इस की तौफ़ीक़ पाने के लिए दुआ का निवेदन किया।

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि "अल्लाह तआला तौफ़ीक़ दे"

एक और मित्र आदरणीय ilirian ibrahimi साहिब ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ की सेवा में दुआ का निवेदन किया कि दुआ करें कि अल्लाह तआला हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की इन समस्त दुआओं को जो आपने शामिल होने वालों ने जलसा के लिए की हैं कोसोवो से आए हुए दल के समस्त सदस्यों के हक़ में इन दुआओं को स्वीकार फ़रमाए।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने दल में शामिल एक मित्र Nezir Balaj साहिब के सम्बन्ध में दरयाफ़त फ़रमाया कि वह कब से अहमदी हैं?

इस पर उन्हों ने अपना परिचय प्रस्तुत करते हुए बताया कि मुझे बैअत किए तीन वर्ष हो चुके हैं। उन्हों ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ की सेवा में दुआ की दरख़ास्त की कि अल्लाह तआला उन्हें मक़बूल धर्म की सेवा करने की की तौफ़ीक़ दे और जमाअत कोसोवो को प्रगति में सकारात्मक किरदार अदा करने की तौफ़ीक़ दे।

कोसोवो के दल की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ के साथ ये मुलाक़ात 12 बजकर पैंतालीस मिनट तक जारी रही। अंत में दल के समस्त सदस्यों ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ के साथ तस्वीर खिचवाने का सौभाग्य पाया।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने दल के सदस्यों को क़लम प्रदान फ़रमाए और बच्चो को प्रेम के साथ चॉकलेट प्रदान फ़रमाए।

मांटेनेगरू से आने दल की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ से भेंट

इसके बाद 12 बजकर 50 मिनट पर देश मांटेनेगरू से आने वाले दल ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ के साथ मुलाक़ात का सौभाग्य प्राप्त किया

इस दल में राग़िब शपताफ़ी साहिब,अली कोवाची साहिब शामिल थे

राग़िब साहिब दूसरी दफ़ा जलसा सालाना जर्मनी पर आए थे। उन्होंने कहा कि इस वर्ष के जलसा में बहुत ही नुमायां अंतर महसूस किया, इंतिज़ामात की दृष्टी से और संख्या की दृष्टी से भी। जलसे की तक़ारीर और विशेषता हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ के भाषण बहुत ही ईमान अफ़रोज़ थे।

उन्होंने बताया कि वह पिछले वर्ष इस जलसा में शामिल हुए थे और वापस जाने के बाद उन्होंने अपने वर्ग के लोगों में कई लोगों से जमाअत के सम्बन्ध से सम्पर्क किया। अपने शहर के मेयर से और उन के नायब से भी सम्पर्क किया। तथा Montenegro के एक भूतपूर्व मिनिस्टर से भी सम्पर्क कर के जमाअत के बारे में बताया।

उन्हों ने बताया कि इस समय दो रुकावटें नज़र आती हैं। एक तो यह कि जो मुस्लमान वर्ग है वह जमाअत के विरुद्ध है और वह क़रीब नहीं आता और दूसरी चीज़ यह है कि ग़ैर मुस्लिम धर्म के क़रीब नहीं आते।

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया मुस्लमान तो व्यक्तिगत लाभ देखते हैं। स्वयं नहीं सोचते कि जमाअत अहमदिया क्या कहती है और जमाअत की क्या शिक्षा है। जो पाकिस्तानी मौलवी कहता है उस को मान लेते हैं और उसी के पीछे चलते हैं। इन्ही बुरे मोलवियों ने इस्लाम की जो शक्ल बिगाड़ी है इस

को ख़त्म करने के लिए इमाम महदी ने आना था।

राग़िब साहिब ने बताया कि मांटेनेगरू में मुस्लमानों के निकट साधारणता यही प्रसिद्ध है कि जमाअत अहमदिया नऊज़ूबिल्लाह (हम इससे ख़ुदा की शरण चाहते हैं) आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को स्वीकार नहीं करती, परन्तु जो व्यक्ति जमाअत को क़रीब से देखता है इस पर तुरंत प्रकट हो जाता है कि यह केवल झूठ है।

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि ये जमाअत अहमदिया पर अत्यधिक झूठा आरोप लगाया जाता है कि हम नऊज़ूबिल्लाह (हम इससे ख़ुदा की शरण चाहते हैं) नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को स्वीकार नहीं करते। जबकि हम तो दावत देते हैं कि आएं और हमें देखें। हम से ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के सही स्थान पर बेहस करें। सारे संसार को पता चल जाएगा कि कौन सही है और कौन ग़लत? परन्तु मुख़ालिफ़ीन हम से बात करने के लिए ही तैयार नहीं होते क्योंकि उनके पास कोई दलील नहीं है।

उन्हों ने बताया कि इस हवाले से हुज़ूर अनवर के ख़ुतबा जुमा ने उन्हें बहुत प्रभावित किया है। लोग तो यह कहते हैं कि अहमदी आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से अलग हैं, परन्तु हुज़ूर का ख़ुतबा सुनने से मेरे दिल में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की मुहब्बत घर कर गई।

उन्हों ने कहा कि वह जमाअत की सच्चाई के क़ायल हो चुके हैं। जलसे के आख़िरी दिन वह बैअत में हिस्सा नहीं ले सके जिसके कारण उनकी तबियत की ख़राबी रही। उनका ब्लड प्रैशर हाई हो गया था। परन्तु अब वह अपने आपको अहमदी ख्याल करते हैं। इसी विषय में उन्हों ने बताया कि जब वह बीमार हुए तो उनकी देखभाल जलसागाह में उपस्थित 4 विभिन्न डाक्टरों ने की और उनका बहुत ज़्यादा ख्याल रखा। इस से भी वह बेहद प्रभावित हैं।

इस दल में शामिल अली कोवाची साहिब ने बताया कि वह पहली बार जलसा पर आए हैं और उन्हें अफ़सोस है कि वह पहले क्यों नहीं आए और इतनी देर क्यों कर दी।

उन्हों ने कहा कि मैं जलसे पर आकर बहुत ख़ुश हूँ। मुझे हृदय की शांति प्राप्त हो रही है। मेहमान-नवाज़ी भी बहुत उत्कृष्ट थी। दुनिया में इस समय केवल झगड़ा और मतभेदों हैं परन्तु जिस तरह का इत्तिफ़ाक़ आप लोगों में है वह संसार में कहीं और नज़र आता।

उन्हों ने बताया कि जब उन्हें जलसा के बारे में बताया गया था तो उन्हों ने कुछ अनुमान तो लगाया था परन्तु यह नहीं सोचा था कि इतने महान पैमाने पर होगा। यदि कोई छोटा सा भी मसला प्रस्तुत आता तो वहां पर उपस्थित सेवक उस को बेहतरीन रंग में हल कर देते। इतने लोगों के लिए खाने का प्रबन्ध बहुत हैरान करने वाला था। आवश्यकता इस बात की है कि लोग यहां आएं और इस्लाम का हक़ीक़ी चेहरा देखें और नई रुहानी देखें।

उन्हों ने कहा कि मोंटेनेगरू में जमाअत के क़ियाम और मिशन की बहुत ज़्यादा आवश्यकता है। इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि जब जमाअत रजिस्टर्ड हो जाएगी और सैंटर क़ायम हो जाएगा तो लोग स्वयं देख लेंगे।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि मोंटेनेगरू में लिटरेचर प्रकाशित करें। हमार काम है कि जिस तरीक़ से भी हो इस्लाम का प्रचार करें । हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का ज़माना ही पूर्णता इस्लाम के प्रचार का ज़माना है। हिदायत तो पहले मुकम्मल हो गई थी। अब यह पूर्णता इस्लाम के प्रचार का समय है। मौलवियों ने तो दीन को बिगाड़ कर रख दिया है। प्रत्येक मौलवी कहता है कि मेरा धर्म सबसे अच्छा है जबकि असल दीन तो क़ुरआन है और साबित शूदा अहादीस हैं आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सुन्नत है और यही इस्लाम है न कि वह जो मौलवी ने अपने पास से बनाया हुआ है।

उन्हों ने बताया कि जर्मनी में जमाअत अहमदिया का परिचय बहुत मज़बूत है और वह इस से बहुत लोग प्रभावित हुए हैं जर्मन हुकूमत जमाअत अहमदिया को बड़ी क़दर की निगाह से देखती है। इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि जमाअत अहमदिया दरअसल हक़ीक़ी इस्लाम की शिक्षा को प्रस्तुत करता है। इसी लिए जमाअत की नेक-नामी है। जहां भी इस्लाम का हक़ीक़ी चेहरा दिखाया जाता है तो लोगों पर इस का लाज़िमन ख़ुशकुन प्रभाव होता है। परन्तु यदि इस्लाम की तशहीर संप्रदायवादी तन्ज़ीमों की ओर से हो तो इस का लाज़िमन बुरा प्रभाव होता है

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि आपकी सेहत और लम्बी आयु के लिए दुआ करता हूँ कि ख़ुदा तआला आप को सेहत दे और आपको तौफ़ीक़ दे कि आप जमाअत के साथ सम्बन्ध निभाने वाले हों और जमाअती कामों में सहायक बनने वाले हों । सफ़लता के लिए आपकी दुआओं की बहुत आवश्यकता है। ख़ुदा आपका साथी और सहायक हो। आपके लिए और राहें खुलती चली जाएं। अंत में उन्हों ने यह भी कहा कि मैं अपने आपको अहमदी शुमार हूँ।

Montenengro के दल की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के साथ यह मुलाक़ात मध्याह्न एक बजे ख़त्म हुई। मुलाक़ात के अंत में दल के सदस्यों ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के साथ तस्वीर खिचवाने की भी सौभाग्य प्राप्त किया।

मास्टर अब्दुल क़ुद्दूस साहिब शहीद की फ़ैमिली की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ से मुलाक़ात

वफ़ूद की मुलाक़ात और मीटिंगज़ के बाद प्रोग्राम के अनुसार हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपने दफ़्तर में तशरीफ़ ले गए और आदरणीय मास्टर अब्दुल क़ुद्दूस साहिब शहीद की फ़ैमिली ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के साथ मुलाक़ात का सौभाग्य प्राप्त किया।

मास्टर अब्दुल क़ुद्दूस शहीद ने पुलिस के अत्यधिक ज़ालिमाना टार्चर के परिणाम में 30 मार्च 2012 को शहादत का स्थान प्राप्त किया। शहीद मरहूम गर्वनमैंट प्राइमरी स्कूल रब्वाह में टीचर थे और पुलिस ने एक झूठे क़तल के झूठे मुक़द्दमें में उन्हें गिरफ़्तार किया और इस क़दर बेदर्दी के साथ मारा और हिंसा की कि आप इन मज़ालिम की सहन न करते हुए अपने ख़ुदा के हुज़ूर हाज़िर हो गए।

विभिन्न देशों के मुबल्लग़ीन की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ से मुलाक़ात

इस के बाद बाहरी देशों, माली, नाईजर, ब्राज़ील, तातारिस्तान, लाथान्विया और कज़ाकिस्ता से आने वाले मुबल्लग़ीन किराम ने हुज़ूर अनवर के साथ मुलाक़ात का सौभाग्य पाया।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने मुबल्लग़ीन से उनके काम और प्रोग्रामों के हवाला से जायज़ा लेकर हिदायात फरमाई और विभिन्न मामलों के बारे में रहनुमाई फ़रमाई।

अंत में समस्त मुबल्लग़ीन ने अपने प्यारे आक़ा के साथ तस्वीर खिचवाने की सौभाग्य पाया।

इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने मस्जिद पधार कर नमाज़ ज़ुहर और अस्र जमा करके पढ़ाई

निकाह की घोषणाएँ

नमाज़ों की अदायगी के बाद प्रोग्राम के अनुसार हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने सात निकाहों का ऐलान किया।

तशह्हुद और ताव्वुज़ और ख़ुतबा निकाह की मस्नून आयात की तिलावत के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया : उस समय में कुछ निकाहों का ऐलान करूँगा। निकाह और शादी के ख़ुशी के अवसर हैं। लड़के के लिए भी और लड़की के लिए भी। दोनों घरों के लिए भी और उनके अज़ीज़ों के लिए भी। परन्तु इस ख़ुशी की वास्तविकता उन पर ही प्रकट होती है या उन के लिए ही इस का लाभ है जो इस ख़ुशी के अवसर पर भी अल्लाह तआला के आदेशों पर चलते हुए उस को याद रखते हैं। इस के आदेशों को याद रखते हैं और अपने दलों को तक़्वा से परिपूर्ण रखते हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया : अल्लाह तआला ने यही नसीहत बार-बार इन आयात में करवाई जो तिलावत की गईं। तक़्वा होगा तो एक दूसरे के रहमी रिश्तों का भी ख्याल रखा जाएगा। एक दूसरे के सम्मान को भी तक़वियत पहुंचाने का प्रयास किया जाएगा और विश्वास क़ायम करने का भी प्रयास किया जायगा।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया : लड़की और लड़के में जब तक विश्वास क़ायम न हो रिश्ते क़ायम नहीं रह सकते। कोई यह ख्याल न करे कि वह हर ख़ामी से पाक है। ख़ामियाँ कमज़ोरियाँ प्रत्येक में होती हैं। इस लिए यह कहना कि मेरी अमुक ख़ामी यदि प्रकट हो गई तो हमारा रिश्ता क़ायम नहीं रहेगा ठीक नहीं। रिश्ते क़ायम रखने के लिए सच्चाई का आदेश है। इस लिए सच्चाई का

हदीस नबवी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

खड़े होकर नमाज़ पढ़ो और अगर खड़े होकर संभव न होतो बैठ कर और अगर बैठ कर भी संभव न हो तो पहलु के बल लेट कर ही सही।

तालिबे दुआ

Sohail Ahmad Nasir and Family

Jamaat Ahmadiyya Adra,Dist: Puruliya. West Bengal

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2020-2022 Vol. 6 Thursday 26 August 2021 Issue No.34

MANAGER :
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Mobile : +91-9915379255
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com

ANNUAL SUBSCRIBTION: Rs. 575/- Per Issue: Rs. 10/- WEIGHT- 20-50 gms/ issue

तक़ाज़ा यह है कि रिश्ते क़ायम करते समय और बाद में भी यदि कोई कमज़ोरी और ख़ामी हो या ग़लती सरज़द हो गई हो तो विश्वास में लेते हुए सच्चाई पर क़ायम रहते हुए इस को एक दूसरे पर प्रकट करें। और बर्दाश्त का माद्दा दोनों में होना चाहिए। बर्दाश्त करें और माफ़ करने का प्रयास करें। दरगुज़र करने का प्रयास करें। जब यह होगा तो फिर रिश्तों में न केवल विश्वास पैदा होता है बल्कि मुहब्बत और प्यार बढ़ता है और वही रिश्ते फिर हमेशा क़ायम रहने वाले भी होते हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया : यहां जब भी मैं आता हूँ लोग बड़ी शिद्दत से इच्छा कर रहे होते हैं कि निकाह पढ़ाऐं परन्तु बहुत से रिश्ते ऐसे हैं कि निकाह तो पढ़वा लेते हैं परन्तु कुछ महीने भी वह रिश्ते क़ायम नहीं रहते। तो असल चीज़ यह नहीं है कि मुझ से निकाह पढ़वा लिया।असल चीज़ यह है कि अल्लाह तआला के आदेश पर चलते हुए अपने रिश्तों को प्रत्येक दृष्टि से क़ायम रखने का प्रयास करें और फिर केवल यही नहीं बल्कि अपनी आइन्दा नसलों का भी विचार रखें और आख़िरी आयत में यही ध्यान यहां दिलाया गया है कि तुम जहां अपने आमाल को उत्तम रूप में अदा करके आइन्दा के लिए ख़ैर इकट्ठी करो और अगले जहान की फ़िक्र करो वहां अपनी नसल जो तुम्हारा भविष्य है, जो तुम्हारा कल है उस का भी ख्याल रखो औरर उनकी तर्बीयत उत्तम रूप से करो। और वह तर्बीयत तभी हो सकती है जब इन्सान स्वयं भी तक़्वा पर चलते हुए अपने जायज़े लेता रहे और पति पत्नी अपने घर के माहौल को सुन्दर और हसीन बनाने का प्रयास करें और इसी तरह एक दूसरे के रहमी रिश्तों के हुक़ूक़ भी अदा करने का प्रयास करें। अल्लाह करे कि आज क़ायम होने वाले रिश्ते इन बातों का ख्याल रखने वाले हों। अब इस के बाद मैं निकाहों का ऐलान करता हूँ।

इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने निमंलिखित निकाहों का ऐलान फ़रमाया :

1. प्रिय शाहिदा मग़फ़ूर पुत्री आदरणीय मग़फ़ूर अहमद साहिब का निकाह प्रिय सफ़ीरुर रहमान नासिर (मुबल्लिग़ सिलसिला जर्मनी) इब्न आदरणीय अबदुर्रहमान नासिर साहिब के साथ तै पाया।

2. प्रिय वजीहा अनवर (वाकिफ-ए-नौ) पुत्री आदरणीय रफ़ीकुर रहमान अनवर साहिब का निकाह प्रिय आसिम बिलाल आरिफ़ (वक्फे नौ) इब्न आदरणीय नसीर अहमद आरिफ़ साहिब के साथ तै पाया।

3. प्रिय नौरीन फ़ारूक़ (वाकिफ-ए-नौ) पुत्री आदरणीय आसिफ़ फ़ारूक़ साहिब का निकाह प्रिय नोमान ख़ालिद (विद्यार्थी जामिया अहमदिया जर्मनी) इब्न आदरणीय ख़ालिद महमूद साहिब के साथ तै पाया।

4. प्रिय सुबान नईम (वाकिफ-ए-नौ) पुत्री आदरणीय नईम अहमद बाजवा साहिब का निकाह प्रिय हसीब अहमद (विद्यार्थी जामिया अहमदिया जर्मनी) इब्न आदरणीय मुबारक अहमद घुमन साहिब के साथ तै पाया।

5. प्रिय अम्तुल हादी आलीया नूर हब्श पुत्री आदरणीय हिदायत अल्लाह हब्श साहिब का निकाह प्रिय ताहिर नदीम चौधरी (वक्फे नौ) इब्न आदरणीय नुरुद्दीन चौधरी साहिब के साथ तै पाया।

6. प्रिय दुर्रे अजम लोन (वाकिफ-ए-नौ) पुत्री आदरणीय सईद अहमद लोन साहिब का निकाह प्रिय मुहम्मद ज़रतुशत हब्श इब्न आदरणीय हिदायतुल्लाह हब्श साहिब के साथ तै पाया।

7. प्रिय साइमा इनाम बाजवा (वाकिफ-ए-नौ) पुत्री आदरणीय ताहिर अहमद बजवा साहिब का निकाह प्रिय मुहम्मद अतहर काहलों (वक्फे नौ) इब्न आदरणीय मुहम्मद असग़र काहलों साहिब के साथ तै पाया।

★ इन निकाहों के ऐलान के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने दुआ करवाई। दुआ के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रीक़ैन को हाथ मिलाने के सौभाग्य से नवाज़ा।

इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपने रहने के स्थान तशरीफ़ ले गए।

बुलग़ारिया से आने दल की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ से मुलाक़ात

(शेष.....)

☆ ☆ ☆ ☆

पृष्ठ 1 का शेष

साथ सच्चे सम्बन्ध पैदा कर ले वह इन लाभों से लाभान्वित हो सकता है जो पहले सच्चों को दिए गए हैं।

बर करेमां कार हा दुशवार नीस्त

ख़ुदा ने जो उनका नाम वली रखा है तो क्या वली बनना ख़ुदा तआला के निकट मुश्किल हो सकता है बल्कि बहुत ही आसान है। हाँ इसके लिए ज़रूरत इस बात की है कि सच्चाई से क़दम रखने वाला हो और उस के मार्ग में धैर्य दृढ़ता और वफ़ादारी के साथ चलने वाला हो ,कोई दुख और कोई तकलीफ़ और मुसीबत उसके क़दम को डगमगा न सके। जब इन्सान ख़ुदा तआला के साथ सच्चा सम्बन्ध पैदा करता है और उन बातों से अलग हो जाता है जो ख़ुदा तआला की ना रजामन्दी का कारण होती हैं बल्कि पवित्रता और तहारत धारण करता है और गंदी बातों से परहेज़ करता है,तो ख़ुदा तआला भी इससे एक सम्बन्ध पैदा कर लेता है और इसके निकट हो जाता है,परन्तु यदि कोई ख़ुदा तआला से दूर होता जाए और गंदगी से निकलने की कोशिश न करे तो फिर ख़ुदा तआला भी इस की परवाह नहीं करता। जैसे फ़रमाया है :

فَلَمَّا زَاغُوْٓا اَزَاغَ اللّٰهُ قُلُوْبَهُمْ

(अलस्सफ़:6)

(मल्फ़ूज़ात भाग 1 पृष्ठ 318 से 319 प्रकाशन 2008 क़ादियान)

☆ ☆ ☆ ☆

पृष्ठ 1 का शेष

का सदाक़त की तलाश करना व्यर्थ कार्य है। यदि हक़ उस पर खुल भी जाएगा तब भी वह उस के स्वीकार करने से वंचित रहेगा। यह इशारा भी इस आयत में है कि कुफ़्फ़ार लोगों पर रोब जमाने के लिए अपने दस्तर-ख़्वान को ख़ूब वसीअ करते। दौलत कमाते और मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर फ़तह पाने के लिए दूर-दूर की तदाबीर इख़तियार करते थे जबकि मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम इन सब बातों से ख़ाली थे। परन्तु बावजूद इसके फ़रमाता है कि मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ही जीतेंगे और कुफ़्फ़ार के दिलों में आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की कामयाबी देख कर हसरत पैदा होगी।

इस आयत से इस तरफ़ भी इशारा है कि لَوْ كَانُوْا مُسْلِمِيْنَ कुफ़्फ़ार का आरिज़ी जज़बा है अन्यथा असल में वे खाने पीने और दौलत कमाने में लगे हुए हैं और आरिज़ी जज़बात इन्सान को नफ़ा नहीं देते बल्कि मुस्तक़िल जज़बात फ़ायदा देते हैं। मुस्लमानों का मुस्तक़िल जज़बा मुस्लिम होने का है आरिज़ी तौर पर वे खाते पीते, दौलत कमाते और कुछ तदाबीर भी आइन्दा के लिए कर लेते हैं। अत: बावजूद इन कामों के वे हिदायत पा रहे हैं जबकि काफ़िर हिदायत नहीं पाते।

(तफ़सीरे कबीर, भाग 3 पृष्ठ 7 प्रकाशन 2010 क़ादियान)

-☆ ☆ ☆ ☆

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अपनी इबादतों को भी विशेष करें और दुनिया को भी इस्लाम की वास्तविक शिक्षा से अवगत कराएं।"

(ख़ुत्बा जुम्अः 17 मई 2019)

तालिबे दुआ

KHALEEL AHMAD

S/O LATE HAJI BASHEER AHMAD SB AND FAMILY,
JAMAAT AHMADIYYA BIJUPURA, SAHARANPUR (U.P)

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad